Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 22 अंक 02 28 फरवरी, 2022 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

किसान बनाम केन्द्रिय बजट-2022

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

पिछले दिनों केंद्रीय बजट में भले ही किसानों के लिए ऊंट के मुंह में जीरे जितना ही मिला हो लेकिन टीवी चैनल और सरकार ने किसानों की हमेशा की तरह कमर तोड़ने में कसर नहीं छोड़ी। सरकार के इस बजट साल में उनके कहे अनुसार आय दोगुनी हो जानी चाहिए थी लेकिन हकीकत ये है आय घटती चली जा रही है। असल में अगर बजट में किसानों को जो कुछ दिया गया है उसे देखकर ऐसा लगता है कि किसान कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों के आंदोलन का एक प्रतिशोध के रूप में लेकर उनसे बदला ले रही है।

किसान की मूल जरूरतों की तरफ भी इस बजट में कोई ध्यान नहीं दिया गया है। बजट में ऐसी कोई घोषणा नहीं की गई हैं जिससे किसानों को फौरी तौर पर कोई राहत मिल सके। न ही प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना में मिलने वाली राशि को बढ़ाया गया है और न ही न्यूनतम समर्थन को लेकर कोई ठोस कदम बजट में उठाया गया है। कृषि व इससे जुड़े समुदाय के लिये बजट में राहत व सब्सिड़ी का कोई प्रावधान नहीं किया गया जिससे राष्ट्र का अन्नदाता वर्ग ठगा सा महसूस कर रहा है। पैट्रोल व डीजल पर गत बजट में दी गई 6517 करोड़ की सब्सिड़ी को घटाकर 5813 करोड़ कर दिया इसी प्रकार खाद पर 140,000 करोड़ की सब्सिड़ी को 105,000 करोड़, खाद्यान्नों पर 286219 करोड़ की राशि को 206481 करोड़, फसल बीमा की 15989 करोड़ की सब्सिड़ी को 15500 करोड़ कर दिया गया। यही नहीं बजट में साधारण जनता व गरीब वर्ग के छात्रों के कल्याण, स्वास्थ्य व शिक्षा पर भी कुठारा घात किया गया है। बच्चों को दी जाने वाले मिड–डे–मिल स्कीम की 11500 करोड़ की राशि को घटाकर 10233 करोड कर दिया है। स्वास्थ्य संबंधी बजट में 85915 करोड़ से बढ़ाकर 86606 की मामूली वृद्धि की गई और गरीब वर्ग के लिये महत्वपूर्ण मनरेगा स्कीम की सब्सिड़ी को घटाकर 98000 करोड़ से 73300 करोड़ कर दिया गया। बजट में शिक्षा सुधार व रोजगार बढ़ाने के लिये कोई प्रावधान नहीं है। हर वर्ष राष्ट्र में करोड़ों बेरोजगारों की नफरी बढ़ रही है। आज पंजाब, हरियाणा में हर तीसरा स्नातक व चण्डीगढ़ जैसे शिक्षित शहर में हर दसवां ग्रेजुएट बेरोजगार घूम रहा है जो कि राष्ट्र के विकास व सुरक्षा के लिये भारी खतरा है। हरियाणा प्रान्त में बेरोजगारी की संख्या 23.4 प्रतिशत जो कि पूरे देश में लगातार गत पांच वर्षों से प्रथम स्थान पर है और प्रदेश में बेरोजगारो की संख्या 25 से 30 लाख तक है।

बजट में किसानों को डिजिटल और हाईटेक बनाने के लिए पीपीपी मोड में नई योजनाएं शुरू करने, जीरो बजट खेती और ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने, मूल्य संवर्धन और प्रबंधन पर जोर देने की बात कही गई हैं लेकिन ये कब होगा और कैसे होगा इसका केवल उसी तरह उम्मीद जताई जा सकती है जैसे 2022 में किसानों की आय दोगुनी हो जानी थी।

पीएम किसान योजना छोटे किसानों को बहुत लाभान्वित कर रही है और पीएम किसान सम्मान निधि के तहत देश के 12 करोड़ किसानों को सालाना 6 हजार रुपये दिए जाते हैं। किसानों को उम्मीद थी कि इस बजट में ये रकम बढ़ाकर 12 हजार रुपये कर दी जाएगी लेकिन इसकी भी घोषणा वो ना कर सकीं।

अगर आकडों को खंगाला जाए तो सरकार की अपनी कमेटी के हिसाब से वर्ष 2016 में देश के किसान परिवार की औसत मासिक आय 8059 थी। सरकारी कमेटी ने महंगाई का अनुमान लगाते हुए हिसाब किया कि वर्ष 2022 तक दोगुनी करने के लिए किसान परिवार की आय 21,146 रुपया प्रति माह हो जानी चाहिए। लेकिन वर्ष 2019 तक किसान की आय बढ़कर मात्र 10,218 हुई थी उसके बाद के 3 साल से सरकार ने आंकड़े देने बंद कर दिए, किसी भी अनुमान से यह 12000 तक नहीं पहुंची है। खेती में इस्तेमाल होने वाले डीजल, खाद, उर्वरक और कीटनाशकों के रेट में पिछले एक साल में 10–20 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। जनवरी 2021 से जनवरी 2022 के बीच डीजल औसत 15–20 रुपए लीटर महंगा हुआ है। जबकि एनपीके उर्वरक की 50 किलो की बोरी 265 से 275 रुपए महंगी हुई है। जबकि साल 2022–23 के लिए गेहूं के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में 40 रुपए प्रति क्विंटल और पिछले साल (खरीद विपणन सीजन 2021–22) के लिए धान की एमएसपी में 72 रुपए प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी हुई थी।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

जबकि इस दौरान कीट, रोग और खरपतवार नाशक दवाओं में 10–20 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। खेती की बढती लागत के अलावा किसान एमएसपी से कम रेट पर बिकती फसलों से भी परेशान हैं। असल में हाल ये है कि क्विंटल धान बेचकर एक बोरी (50 किलो) डीएपी नहीं खरीद सकते। डीएपी की सरकारी कीमत 1206 रुपए है लेकिन कई जगह वो 1400–1600 में बिकती है। बजट में इस बार किसान को पिछले दो साल में अर्थव्यवस्था को बचाए रखने के लिए इनाम देना बनता था। किसान ने बार–बार कहा है उसे दान नहीं दाम चाहिए। सरकार ने घोषणा कि गेहूं और धान की रिकॉर्ड खरीद पर किसान की जेब में 2,37,000 करोड़ रुपया पहुंचाया है। आंकड़ो के आकंलन से पता लगा कि दरअसल इस साल की सरकारी खरीद पिछले साल से भी कम थी और 2,48,000 करोड़ रुपए का धान और गेहूं खरीदा गया था। इस साल सरकारी खरीद की मात्रा 1,286 लाख टन से घटकर 1,208 लाख टन हो गई थी। खरीद का फायदा उठाने वाले किसानों की संख्या भी 1.97 करोड़ से घट कर 1.63 करोड़ हो गई है।

कृषि प्रधान राष्ट्र की 80 प्रतिशत ग्रामीण जनता कृषि व इससे संबंधित कारोबार पर निर्भर है और 86 प्रतिशत किसान 2 से 2.5 एकड़ भूमि पर खेती करते है जिनको प्राथमिकता के आधार पर राहत पहुंचाने की जरूरत है। इसको राष्ट्र के पूर्व प्रधानमंत्रियों ने भी महसूस किया है। स्व० प्रधानमंत्री प० लाल बहादुर शास्त्री ने किसान व किसान पुत्र के सम्मान के लिये जय जवान, जय किसान का नारा बुलंद किया था। उनका मानना था कि किसान खेत में व उसका सुपुत्र सीमा पर पसीना बहाता है। दीनबंधु चौ० छोटूराम ने किसान–काश्तकार को अपने हितों के प्रति जागरूक करने व फसल की वाजिब कीमत के लिये प्रेरित करते हुये कहा था कि "जिस खेत से मयस्सर, ना हो दो जून की रोटी, उस खेत की गोसा–ए–गंदम को जला दो"। इस प्रकार उन्होंने अंग्रेजी हकूमत को किसान की पीड़ा से अवगत करा कर किसान की फसल के उचित दाम देने की चेतावनी दी थी। स्व० प्रधानमंत्री चौ० चरण सिंह ने वर्ष 1978 में गन्ने की बेकदरी व उचित दाम न मिलने से किसान प्रतिनिधि मण्डल को गुस्से में कहा था कि "मेरे सिर पर भी गन्ने की बिजाई कर दो" यानि कि अगर फसल के उचित दाम नही मिलते तो बिजाई क्यों करते हो। इसी प्रकार स्व० उपप्रधान मंत्री चौ० देवीलाल ने किसानों व कृषि सुधार हेतु बंजर भूमि के सुधार हेतु जिप्सम आदि, ऊंची–नीची जमीन को समतल करवाने के लिये भूमि सुधार निगम द्वारा सब्सिड़ी देकर व सीमांत, छोटे किसानों के लिये छोटे टैक्ट्ररों पर भारी सब्सिड़ी देकर कृषि व्यवस्था में सुधार किये थे। आज हरियाणा, पंजाब आदि राज्यों में हर 50 किलोमीटर के बाद जमीन का स्तर व जल स्तर बदल चुका है, जिनको उर्वरको, टयूववैल व कृषि उपकरणों पर प्रर्याप्त सब्सिड़ी देकर कृषि की व्यवस्था को सुधारना अति आवश्यक है। लेकिन अफसोस व चिंता का विषय है कि अन्नदाता एक साल तक अपने हितो के लिये भीष्ण गर्मी, सर्दी व खराब मौसम में सड़क पर संघर्ष करता रहा और सरकार द्वारा झूठा सब्जबाग दिखाकर समझौते के तहत आंदोलन समाप्त करा दिया गया उसको बजट से अपने हितो व उचित मांगों के समाधान की काफी उम्मीद की। लेकिन न तो कृषि का मुख्य सूत्र एम.एस.पी पर अपने वायदे अनुसार अबतक कोई समिति बनाई गई और ना ही आंदोलन में जान गंवाने वाले किसानों के परिवारों के लिये किसी मुआवजे का प्रावधान किया गया। यही नहीं, किसानों कोएम.एस.पी. दिलवाने के लिए स्व० अरुण जेटली द्वारा बनाई गई आशा नामक स्कीम को सरकार ने इस साल बंद कर दिया है। इस योजना का बजट घटाते–घटाते पिछले साल 400 करोड़ रुपए किया गया था। इस बार उसे घटाकर मात्र 100 करोड़ रुपया कर दिया गया है।

बाजार में फसल का ठीक दाम मिल सके उसके लिए सरकार की पी.एस.एस. (प्राइस स्टेबलाइजेशन) और एम.आई.एस. (मार्कीट इंटरवैंशन) स्कीम में पिछले साल खर्च हुआ 3595 करोड़ रुपया, लेकिन इस साल का बजट है मात्र 1500 करोड़ रुपये कृषि और उससे जुड़े हुए क्षेत्रों का कुल बजट पिछले साल के 4.26 प्रतिशत से घटाकर इस वर्ष 3.84 प्रतिशत कर दिया गया है। ग्रामीण विकास का बजट पिछले साल 5.59 प्रतिशत से घटाकर इस वर्ष 5.23 प्रतिशत कर दिया गया है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का बजट पिछले साल 16000 करोड़ रुपए से घटाकर इस साल 15500 करोड़ रुपए कर दिया गया है। मनरेगा में पिछले साल खर्च हुआ था 97,034 करोड़ रुपए लेकिन इस साल का बजट है मात्र 72,034 करोड़ रुपया है।

जिस एग्री इंफ्रा फंड की बात 2 साल से जोर–शोर से चल रही है उसमें 1 लाख करोड़ रुपए की जगह अब तक मात्र 2600 करोड़ रुपए सैंक्शन हुआ है। इसमें सरकार का योगदान पिछले साल 900 करोड़ से घटाकर इस साल 500 करोड़ कर दिया गया है। सरकार को–ऑपरेटिव को समर्थन देने की बात करती है लेकिन फार्मर प्रोड्यूसर ऑर्गेनाइजेशन

के लिए बजट पिछले साल 700 करोड़ से घटाकर इस साल 500 करोड़ कर दिया गया है। पराली जलाने को रोकने के लिए किसान को सहायता देने के लिए पिछले साल 700 करोड़ का बजट था जो इस साल घटाकर शून्य कर दिया गया है।

बजट भाषण में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि एमएसपी के जरिए किसानों के खाते में 2.37 लाख करोड़ रुपए भेजे जाएंगे। लेकिन बजट में इस बात का कोई उल्लेख नहीं किया गया है कि सभी किसानों की फसल एमएसपी पर खरीदी कैसे जायेगी। फिलहाल हालात ये है कि हरियाणा और पंजाब को छोड़कर देश के बाकी राज्यों में न्यूनतम समर्थन मूल्यं पर फसलों की खरीद की हालात बहुत दयनीय है। किसानों को उम्मीद थी कि फर्टिलाइजर्स और कृषि यंत्रों पर सब्सिडी बढ़ाई जाएगी। बजट में कृषि में तकनीक को बढ़ावा देने के लिये जरूर कदम उठाने की बात कही गई है परंतु किसानों के रोज काम आने वाले कृषि यंत्रों पर किसी तरह की सब्सिडी या अनुदान की घोषणा नहीं की गई। बिना सरकार की सहायता के किसान, खासकर छोटे और सीमांत किसान किसी भी हाल में खेती में मशीनीकरण को बढ़ावा नहीं दे सकता। कृषि एवं किसानों के विकास हेतु सभी खाद्य पदार्थों एवं फल तथा सब्जियों का न्यूनतम मूल्य कानूनी तौर से निर्धारित करने की आवश्यकता है।

डॉ० महेंद्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

न जी भर के देखा, न कुछ बात की

– कमलेश भारतीय

पंजाब में कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी बाड्रा प्रचार के लिए आईं तो मंच पर मौजूद पंजाब प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष व क्रिकेटर नवजोत सिंह सिद्धू ने इशारे से जनसभा को संबोधित करने से साफ इंकार करते चन्नी की ओर इशारा किया कि इन्हें ही बुला लीजिए। न सुनील जाखड़ ने संबोधित किया जनसभा को। यह तस्वीर है कांग्रेस की एकजुटता की चन्नी को मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित करने के बाद। लुधियाना में सिद्धू की मौजूदगी में राहुल गांधी ने चन्नी को मुख्ययंत्री का चेहरा घोषित किया था और वह भी नवजोत सिद्धू के साथ आधे घंटे की बैठक में समझाने के बाद और यह उम्मीद जाहिर की थी कि सभी नेता मिल कर कांग्रेस के लिए काम करेंगे लेकिन यह बात साफ हो गयी कि सभी नेता एकसाथ मिल कर काम नहीं कर रहे बल्कि सभी के सभी दर्शनी घोड़े मात्र हैं जिन्हें कांग्रेस रेस के घोड़े मान बैठी है। इसीलिए ये पंक्तियां याद आईं:–

न जी भर के देखा, न कुछ बात की....
बड़ी आरजू थी मुलाकात की,,

पंजाब प्रदेश कांग्रेस में सब कुछ ठीक चल रहा था और सिर्फ छह माह पहले कैप्टन अमरेंद्र सिंह की सरकार को पलटने में प्रियंका गांधी और राहुल गांधी ने नवजोत सिद्धू का साथ दिया था और कैप्टन अमरेंद्र सिंह ने कहा था कि ये दोनों भाई बहन अभी बच्चे हैं और राजनीति नहीं समझते। यही नहीं राहुल बिना कैप्टन को मिले शिमला चले गये थे। आज शायद प्रियंका को यह बात याद आई हो।

बेशक प्रियंका ने कैप्टन पर आरोप लगाया है कि वे भाजपा के इशारे पर कांग्रेस की सरकार चला रहे थे और अब भाजपा से समझौता करके यह बात साबित भी हो गयी। इनके बाद गरीब घर के बेटे चन्नी को कांग्रेस ने मुख्यमंत्री बनाया। प्रियंका ने गुजरात व दिल्ली के राजनीति के मॉडल पर भी सवाल उठाते कहा कि सौ दिन में इतने काम करने वाली सरकार चाहिए या सिर्फ मुफ्त के वादों वाली सरकार चाहिए? हालांकि अरविंद केजरीवाल कह रहे हैं कि सर्वे में चन्नी अपनी दोनों सीटों से चुनाव हारते दिखाई दे रहे हैं ।

पंजाब में कांग्रेस असल में छह माह रहते आपसी फुटोबल में ही उलझ कर रह गयी। कभी नवजोत सिद्धू अधिकारियों को हटवाने को प्रतिष्ठा का सवाल बना बैठे तो कभी इस्तीफा देने की घोषणा कर बैठे। सुनील जाखड़ को अपना दर्द है कि जब 42 विधायक उनके पक्ष में थे मुख्यमंत्री बनाने के मुद्दे पर तब अंबिका सोनी ने यह क्यों कह दिया कि पंजाब में कोई हिन्दू मुख्यमंत्री स्वीकार नहीं होगा और इस तरह उनका समर्थन किसी काम न आया। जिस सिद्धू ने इस आशा में कैप्टन को बाहर करवाया कि उनके बाद उसी के सिर पर ताज रखा जायेगा, वह देखते देखते चन्नी के सिर पर रख दिया गया और वे देखते ही रह गये राजनीति के रंग। अब साफ है कि कांग्रेस न चुनाव से पहले एकजुट है और न ही चुनाव के बाद एकजुट रहेगी। इसमें सिद्धू की ओर से कोई न कोई दलबदल की आशंका रहेगी। सुनील जाखड़ तो चुनाव ही नहीं लड़ रहे हैं। वे इतने आहत हुए कि चुनाव से ही दूर जा बैठे। इस तरह एक अच्छी भली चल रही सरकार को खुद अपने हाथों ही खतरे में डाल लिया और जो

भाजपा जमीन पर कहीं पर न थी, उसे कैप्टन अमरेंद्र का साथ मिल गया। ऊपर से राम रहीम की पैरोल क्या गुल खिलायेगी?

इस तरह कांग्रेस का दृश्य देखा जा सकता है।

सिद्धू अपनी ही क्रीज में कैद ?

पंजाब प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष व क्रिकेटर नवजोत सिंह सिद्धू क्या अपनी ही क्रीज में बंद या कैद होकर रह गये हैं? जो स्थितियां बनीं उन्हें देखकर तो ऐसा ही लगता है कि सिद्धू सचमुच बेबस होकर क्रीज में कैद होकर रह गये हैं। ऐसे में क्रिकेट खिलाड़ी या तो बड़ा शॉट लगाता है या फिर कैच आउट हो जाता है।

सिद्धू ने राजनीति में प्रवेश भाजपा के मंच पर किया था और खूब वाहवाही के बीच चुनाव जीता लेकिन जब भाजपा को जरूरत थी इनके किसी राज्य में चुनाव प्रचार की तब ये महाशय बिग बॉस में अपना बैग लेकर चल दिये। मुश्किल से इन्हें वापस बुलाया जा सका। पंजाब के पिछले विधानसभा चुनाव से पहले आप के अरविंद केजरीवाल के साथ ब्रेकफास्ट करने गये लेकिन चुनाव निकट आने तक कांग्रेस में शामिल हो गये और अमृतसर से जीते, मंत्री भी बने लेकिन कैप्टन के साथ मतभेद होते होते विवाद शुरू हो जाने से मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर बाहर आ गये। इनकी पत्नी को भी कोई सम्मानजनक पद नहीं मिला। फिर अभियान चलाया कैप्टन अमरेंद्र सिंह के खिलाफ। विधायकों के घर घर जाकर मिले और कैप्टन की चुनाव से छह माह पूर्व कांग्रेस हाईकमान ने छुट्टी कर दी। इसके बावजूद सिद्धू को मनचाही मुख्यमंत्री की कुर्सी न मिली। अचानक से छींका टूटा चरणजीत सिंह चन्नी के सिर पर। कुछ दिन चन्नी का हाथ पकड़कर चले लेकिन फिर अपनी चाल पर आ गये और सवाल पर सवाल और बवाल पर बवाल करने लगे। जहां तक कि अध्यक्ष पद से भी इस्तीफा देने की घोषणा कर दी। कांग्रेस हाईकमान ने मनाया और अध्यक्ष बनाये रखा। सिद्धू भी मान गये इस उम्मीद में कि क्या पता मुख्यमंत्री पद हाथ लग ही जाये।

अब पंजाब में आप ने भगवंत मान को मुख्यमंत्री चेहरा घोषित कर दिया तो सिद्धू ने भी जोर लगाया कि चेहरा घोषित किया जाये। कहीं मुझे दर्शनी घोड़ा ही न बनाये रखा जाएं और हुआ वही जिस बात का सिद्धू को डर था। राहुल गांधी ने लुधियाना आकर चन्नी को ही मुख्यमंत्री चेहरा घोषित कर दिया और सिद्धू बगल में बैठे देखते रह गये। ऐसा होगा यह सोचा न था ।

अब कह रहे हैं कि आप के केजरीवाल मेरी पत्नी को टिकट देना चाहते थे लेकिन मुझे सिर्फ प्रचार की जिम्मेदारी दे रहे थे। उधर आप ने भगवंत मान को मुख्यमंत्री चेहरा भी घोषित कर दिया। इस तरह सिद्धू का आप में जाना भी रह गया। वहां भी कोई इन्हें मुख्यमंत्री चेहरा स्वीकर करने को तैयार नहीं था। वहां भी दरवाजे बंद पाकर कांग्रेस में ही बैठे रह गये। लेकिन एक भेद तो खुल ही गया कि कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष रहते भी सिद्धू कांग्रेस के नहीं थे और जुगाड़ में थे कि कहीं से मुख्यमंत्री बनाने का भरोसा मिले तो चला जाऊं हाथ झटक कर।

कैप्टन अमरेंद्र सिंह ने इस सारे प्रकरण पर फिर कहा कि सिद्धू चुप नहीं बैठेने वाला और फिर कोई नया धमाका करेगा और कांग्रेस देखती रह जायेगी। एक बात सिद्धू को समझ लेनी चाहिए कि वे मुख्यमंत्री पद से चूक गये हैं और सचमुच हर पार्टी इन्हें प्रदर्शनी घोड़े के बराबर ही अहमियत देती है। समय गंवाने से पहले ही सिद्धू को यह बात समझ लेनी चाहिए और जितनी जल्दी समझेंगे उतनी जल्दी उनमें राजनीतिक मैच्योरिटी आयेगी।

ये सवालात किसे पेश करूं,,,,? – कमलेश भारतीय

हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद चाहते थे कि कांग्रेस को भंग कर दिया जाये क्योंकि उन्हें अंदाजा था कि कांग्रेस रही तो क्या होगा। प्रधानमंत्री आगे बढ़े और कहा कि कांग्रेस न होती तो आज लोकतंत्र परिवारवाद से मुक्त होता। संस्थागत भ्रष्टाचार न होते, स्त्रियों के नरसंहार न होते, पंजाब में आतंकवाद न होता और दिल्ली में दंगा न होता और कश्मीर छोड़ने की नौबत न आती। कितना कुछ कहा कांग्रेस को लेकर, पूरा गुबार निकाल दिया। अप्रत्यक्ष रूप से वर्चुअल रैली कर दी राज्यसभा में पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव देखते हुए ।

अब जवाब में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी कह रहे हैं कि मेरे तीन सवालों के जवाब फिर भी नहीं दिये प्रधानमंत्री जी ने। कांग्रेस इनके निशाने पर है क्योंकि ये कांग्रेस से अंदर ही अंदर डरते हैं। मैंने पूछा था दो हिंदुस्तान क्यों बना दिये हैं? मैंने पूछा था कि चीन और पाकिस्तान से बढ़ रहे खतरों के बारे में क्या कर रहे हैं आप? मैंने पूछा था कि संवैधानिक संस्थाओं पर कब्जों को लेकर क्या कर रहे हैं आप? इतने लम्बे भाषण में मेरे सवालों के जवाब नहीं दिये। शायद वे शायर की जुबान में इस तरह पूछते –

ये सवालात किसे पेश करूं ?

क्या भाजपा इतनी साफ सुथरा छवि वाली पार्टी है? फिर उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में हुए कांड के आधार पर आज तक केंद्रीय गृह राज्य मंत्री टेनी को मंत्रिमंडल से बाहर का रास्ता क्यों नहीं दिखाया? कुलदीप सेंगर को आखिर तक क्यों भाजपा से बाहर निकालने से बचते रहे? क्या दंगे खत्म हो गये? क्या कांग्रेस ही हर काम के लिए दोषी है? कांग्रेस के नेताओं को फिर भाजपा में शामिल करने की जल्दी क्यों रहती है? सर्वे में पचहतर प्रतिशत कांग्रेसी ही शामिल क्यों कर लिये? भाजपा है तो दलबदल है, भाजपा है तो विधायक बिकाऊ हैं, भाजपा है तो ईडी, सीबीआई किसी तोतों की तरह काम कर रही हैं। भाजपा न होती तो किसान आंदोलन को मजबूर न होते। भाजपा के राज

में ही दिल्ली के लाल किले पर कोई और ध्वज फहराने की हिम्मत और हिमाकत हुई। कितने इल्जाम आपके भी नाम हैं, ये क्यों भूल जाते हो? महात्मा गांधी से इतना प्रेम तो उनकी प्रिय धुन हटाई क्यों? चुनाव के दौरान किसी तथाकथित बाबा को पैरोल क्यों? चुनाव के दौरान ईडी के छापे क्यों? चुनाव के दौरान दूसरों के अश्लील वीडियो क्यों? पहले क्यों नहीं? कांग्रेस के परिवारवाद को अपनाया क्यों? राज्यपालों की गरिमा कहां गयी? कोरोना के दौरान पहले पश्चिमी बंगाल और बाद में पंजाब, उत्तर प्रदेश में रैलियां क्यों? ये सवालात किसे पेश करूं ?

ममता बनर्जी की राज्यपाल से कुट्टी

पश्चिमी बंगाल की मुख्यमंत्री और सबकी दीदी ममता बनर्जी ने राज्यपाल जगदीप धनखड़ से कुट्टी कर ली है। यह ऐलान बाकायदा ट्वीटर पर राज्यपाल को ब्लॉक कर ममता बनर्जी ने किया है। सारी दुनिया जान गयी है और यही ममता बनर्जी संदेश देना चाहती थीं। उनका कहना है कि राज्यपाल ने मुझे और अधिकारियों को बहुत परेशान कर रखा था। इसलिए तंग आकर उन्हें ब्लॉक करना ही पड़ा। पहले भी विधानसभा चुनाव के परिणाम के ठीक बाद ममता बनर्जी के शपथ ग्रहण समारोह में भी इन दोनों की दूरियां सामने आई थीं जब पश्चिमी बंगाल की कानून व्यवस्था पर राज्यपाल ने सबके सामने सवाल उठा दिया था और ममता ने जवाब दिया था कि अब से पहले तो आपकी ही देखरेख में चल रहा था, आज से मैंने पद संभाला है और ध्यान दिया जायेगा। लेकिन राज्यपाल महोदय ने अपने पद की गरिमा का ख्याल न रखा और लगातार कुछ न कुछ टिप्पणियां करते चले गये। ममता बनर्जी जब तक बर्दाश्त कर सकीं तब तक करती रहीं और आखिरकार मर्यादा तोड़कर घोषणा कर दी ट्विटर पर संबंध तोड़ने की।

इससे एक बार फिर राज्यपाल और मुख्यमंत्री के बीच संबंधों पर सवाल उठ खड़े हुए हैं और वहीं संविधान व पद की मर्यादा भी घेरे में आ गये हैं। क्या राज्यपाल को इस तरह सार्वजनिक रूप से सवाल उठाने चाहिएं याकि मुख्यमंत्री को बुला कर विचार विमर्श करना चाहिए? क्या राज्यपाल जो रास्ता अपनाये हुए हैं उससे उनकी व पद की गरिमा प्रभावित नहीं होती? इस तरह प्रतिकूल टिप्पणियाँ करने के लिए क्या उन्हें छूट मिली हुई है? वे एक राज्य के सर्वोच्च पद पर हैं और उन्हें इसकी गरिमा बनाये रखनी चाहिए।

राजस्थान में भी मुख्यमंत्री और राज्यपाल के बीच कुछ समय मतभेद हुए थे लेकिन बाद में स्थिति सुखद बन गयी। मुख्यमंत्री प्रदर्शन करने राज्यपाल भवन पहुंच गये थे लेकिन फिर सब पटरी पर आते ही संबंध सही हो गये और मुख्यमंत्री को राज्यपाल को ब्लॉक करने की जरूरत नहीं पड़ी। पश्चिमी बंगाल के राज्यपाल को बदले जाने की मांग लगातार ममता बनर्जी उठाती आ रही हैं और राष्ट्रपति इसे अनसुना करते आ रहे हैं। अच्छा होगा कोई फैसला जल्द लिया जाये ।

देश, भ्रष्टाचार और हम....

हिंदी के प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद जहां कहते हैं कि अरूण यह मधुमय देश हमारा वहीं हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसे भ्रष्टाचार की दीमक द्वारा खाये जाने वाला देश बता रहे हैं। बात बिल्कुल सही है। कुछ भी गलत नहीं कहा मन की बात में। कांग्रेस राज में बड़े बड़े घोटाले हुए तो भाजपा को अवसर दिया जनता ने। हजारों करोड़ों रुपये के स्कैम कि सुन कर दिल दहल जाये। कुछ झूठे भी साबित हुए और कुछ नेताओं को सजा भी भुगतनी पड़ी।

इसके बावजूद पिछले सात वर्षों में भ्रष्टाचार पर रोक लगाने की कोई गंभीर कोशिश क्यों नहीं की गयी? सरकारें गिराने में क्या भ्रष्टाचार काम नहीं आया? नेताओं को खरीदने में क्या कोई भ्रष्टाचार नहीं हुआ? अपने मन से, आत्मा से पूछियेगा एकांत में या बद्री केदारनाथ की समाधि में ।

दूर क्यों जाना? दिल्ली में इस जमाने के गांधी अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन ने भी भाजपा की सरकार बनवाने में मदद की, इसमें कोई दो राय नहीं। जंतर मंतर और रामलीला मैदान ने ऐसी रामलीला दिखाई कि कांग्रेस को सही औकात दिखा दी। अरविंद केजरीवाल को राज मिला तो इसी आंदोलन के दम पर। क्या दिल्ली में भ्रष्टाचार खत्म हो गया? आप की सरकार में ही मंत्री रहे मिश्रा जी ने आरोप लगाये कि करोड़ों रुपये लेते अपनी आंखों से देखा। फिर वे भाजपा में चले गये। वहां उनकी आंखें बंद हो गयीं, कुछ दिखाई नहीं देता अब। धृतराष्ट्र की गति को प्राप्त हो गये। आप की टिकटें बिकने के आरोप पंजाब के विधानसभा चुनाव में लग रहे हैं बल्कि हर पार्टी दूसरी पार्टियों पर टिकटें बेचने के आरोप लगा रही है। ये भ्रष्टाचार की नींव ही तो डाली जा रही है। जब टिकटें खरीद कर ये विधायक बन जायेंगे तब ये जनता से इसी धन की वसूली करेंगे कि नहीं? ऐसे ही नौकरियों में हो रहा है जो लाखों देकर नौकरी पाते हैं, वे भ्रष्टाचार से मुक्त प्रशासन कैसे दे सकते हैं? अपने हरियाणा में एक अकेला नागर ही तो ऐसा नहीं है जो पहले पैसे देकर लगा और फिर पैसे कमाने लगा ऊपर से। एक संस्था की बदनामी करवाई सो अलग। इतने पैसे इकट्ठे किये कि ब्रीफकेस वाली सरकार कहने लगा विपक्ष। नागर को पकड़ लिया गया और नौकरी से बर्खास्त किया गया। यह उस सरकार में हो रहा है जिसे ईमानदार सरकार का प्रमाणपत्र प्रधानमंत्री जी ने दिया है। गणतंत्र दिवस पर बागवानी अधिकारी सम्मानित होता है और दूसरे दिन ही तीस हजार रुपये की रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़ लिया जाता है। अब सरकार इससे सम्मान वापस लेने जा रही है। कितने मामले सामने आ चुके और दावा यह कि पर्ची खर्ची सिस्टम बंद कर दिया तो विपक्ष को बेचौनी हो रही है। कहां खत्म हुआ पर्ची और खर्ची सिस्टम?

प्रधानमंत्री जी आपकी चिंता बहुत वाजिब और उपाय कहीं दिखाई नहीं दे रहा कोई। कथनी और करनी एक होनी चाहिए कि नहीं? कहीं है ऐसा सांसद कृष्ण कांत जैसा जो शाम को चुनाव खर्च चौक करता हो और खर्च का पूरा ब्यौरा कार्यकर्त्ताओं से लेता हो? यह कृष्णकांत ने अनुपम उदाहरण दिया हमें। आज तो नेताओं को खुद नहीं पता कितना पैसा खर्च होता है। हां, हमारे चौ बीरेन्द्र सिंह ने कभी कहा था कि सौ करोड़ में बिकती है राज्यसभा सीट। फिर वे भी राज्यसभा में चले गये। भाजपा सरकार पर शुरू में आरोप लगा कि यह सूट बूट की सरकार है। फिर तो राजीव गांधी तक पर आरोप लगाये भाजपा ने। कभी दंगों का जनक कहा तो कभी बोफोर्स कांड उठाया जिसमें वे बेदाग साबित हुए।

फिल्मों में भी भ्रष्टाचार के कितने ही दृश्य दिखाये जाते हैं और ये हमारे समाज का आइना होती हैं। मुन्ना भाई लगे रहो में एक वृद्ध ऑफिस में ही सब कुछ उतार कर देने लगता है तब कहीं प्रशासन उसकी व्यथा समझ पाता है। विष्णु प्रभाकर की सबसे प्रसिद्ध कहानी धरती अब भी घूम रही है इस भ्रष्टाचार की गिरी हुई बात सामने रखती है तो मोहन राकेश की कहानी आखिरी सामान भ्रष्टाचार को सामने लाती है।

खैर, रब्ब खैर करे। हम नमन् करते हैं अपने प्रधानमंत्री का जिन्होंने देश की सबसे बड़ी महामारी पहचानी और उम्मीद करते हैं कि इसका इलाज भी ढूंढेंगे।

सामाजिक क्रांति के प्रतीक छोटूराम

– डॉ हवासिंह

प्रायः महापुरुषों के जीवन को मोड़ देने का श्रेय घटनाओं को होता है। छोटूराम का जन्म एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। उनके पिता उनको अच्छी शिक्षा देना चाहते थे, परंतु पैसे का अभाव था। उनके पिताजी व छोटूराम साहूकार के पास पैसे लेने के लिए घर पहुंचे। लालाजी ने छोटूराम के पिता को अपना पंखा खींचने का आदेश दिया। इस पर बालक, किंतु स्वाभिमानी व संस्कारी, छोटूराम की आत्मा को तिलमिला दिया और साहूकार को कहा कि तुम्हें लज्जा नहीं आती कि अपने लड़के के बैठे हुए भी तुम पंखा खींचने के लिए उससे ना कह कर मेरे बूढ़े पिता से पंखा खिंचवाते हो। इस घटना ने उनके जीवन की दिशा व सोच को ही बदल डाला। उन्होंने कृषक व मजदूरों के शोषण एवं उत्पीड़न को समाप्त करने का संकल्प लिया।

उन्होंने कड़ी मेहनत कर अव्वल नंबर लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त की। कानून की डिग्री लेने के पश्चात आगरा में वकालत शुरू की। अपने जीवन निर्वाह व उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ट्यूशन व प्राइवेट नौकरी भी की। सन 1916 में रोहतक कोर्ट में वकालत शुरू की। वकीलों का व्यवहार मुवक्किलों के प्रति अच्छा नहीं था। उनको कुर्सी व मूढ़ों पर बैठने की इजाजत नहीं थी। उन्होंने इस परंपरा का विरोध ही नहीं बल्कि अपने चेंबर में कुर्सी वह मूढ़ों का प्रबंध भी किया। उन्होंने वकालत के साथ–साथ आम जनता की सामाजिक व आर्थिक समस्याओं को सुना ही नहीं बल्कि उनके समाधान के लिए संघर्ष करना शुरू कर दिया। स्वतन्त्रता संघर्ष में भी भाग लेना आरंभ कर दिया तथा 1916 में उनको रोहतक जिले का कांग्रेस का प्रधान भी बनाया गया।

महात्मा गांधी ने प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेजों का समर्थन किया और देशवासियों को फौज में भर्ती होने की अपील भी की। इन्हीं का अनुसरण करते हुए छोटूराम ने पंजाब में लगभग 26 हजार नौजवानों को ब्रिटिश फौज में भर्ती कराने का काम किया। ब्रिटिश सरकार ने महात्मा गांधी की सामाजिक सेवाओं को देखते हुए वर्ष 1915 में केसर–ए–हिंद के खिताब से नवाजा। प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर कांग्रेस के नेताओं को निराशा हाथ लगी। 1920 में महात्मा गांधी ने रोलेट एक्ट के विरोध में असहयोग आंदोलन का बिगुल बजा दिया। कांग्रेस के कई महान नेताओं जैसे सी.आर. दास, एनी बेसेंट, तिलक, डॉक्टर सप्रू, डॉ सत्यपाल, मदन मोहन मालवीय ने अपनी असहमति जताई। कुछ अन्य नेताओं जैसे रविंद्र नाथ टैगोर, डॉ. अंबेडकर तथा मोहम्मद अली जिन्ना ने भी इसका विरोध किया। हिंदू सभा तथा जस्टिस पार्टी मद्रास ने भी इसका विरोध किया। इन सभी नेताओं, पार्टियों व संगठनों का मत था कि इस आंदोलन में हर वर्ग व मत के लोग शामिल होंगे तो उनसे यह उम्मीद रखना कि असहयोग आंदोलन अहिंसात्मक रहेगा, एक मिथ्या और गलत उम्मीद है। नेताओं का विचार था कि यदि असहयोग आंदोलन हिंसक हो गया तो, इसके परिणाम की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया। 1920 में रोहतक कांग्रेस अधिवेशन में छोटूराम ने असहयोग आंदोलन का विरोध किया। उनका कहना था कि स्वराज्य केवल अहसहयोग या जंग से नहीं प्राप्त किया जा सकता, बल्कि संवैधानिक तथा नीतिगत मार्ग भी स्वराज्य प्राप्ति का साधन हो सकता है। असहयोग आंदोलन के दौरान सरकारी स्कूलों का बहिष्कार उचित नहीं है। तत्कालीन पंजाब में निजी व सरकारी स्कूल नाम मात्र ही थे। देश में जिन किसानों ने असहयोग आंदोलन में भाग लिया उनकी फसलों को जला दिया गया। अतः छोटूराम ने इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए असहयोग आंदोलन का विरोध किया तथा कांग्रेस से भी अलविदा कह दिया। छोटूराम का गांधीजी से मतभेद थे न कि मन भेद।

छोटूराम ने अपना राजनीतिक सफर ब्रिटिश भारत पंजाब विधान परिषद का सदस्य बनकर किया। उन्होंने 1921 से जनवरी 1945 तक पंजाब विधान परिषद का सदस्य बनकर

शिक्षा व ग्रामीण, खेती व राजस्व मंत्री के रूप में सेवाएं दी। उनका स्वतंत्रता, समानता तथा न्याय में अटूट विश्वास था। वे सत्ता को सुख भोगने के लिए नहीं बल्कि आम जनता के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक उत्थान का माध्यम समझते थे। चौधरी छोटूराम ने इस दिशा में पंजाब में कई कानून बनवाए। पंजाब रहन पुण्य प्राप्ति कानून, पंजाब ऋणी राहत कानून, पंजाब क्रिमिनल संशोधन बिल, मनी लेंडर्स रजिस्ट्रेशन कानून तथा एग्रीकल्चर प्रोडक्शन मार्केटिंग कानून इत्यादि। इन कानूनों का मुख्य उद्देश्य था कि किस प्रकार किसानों, मजदूरों व नौजवानों को कर्जा मुक्त जीवन मिले तथा उनका सामाजिक व आर्थिक विकास हो। खेती के उत्पादन को बढ़ाने के लिए उन्होंने पुरानी नहरों की साफ–सफाई तथा नई नहरों का निर्माण करवाया। भाखड़ा डैम का ब्लूप्रिंट भी तैयार किया। छोटूराम ने सामाजिक बुराइयों दहेज प्रथा, बाल विवाह, बहु विवाह, अनियंत्रित जनसंख्या, सांप्रदायिकता, अंधविश्वास, निरक्षरता, नैतिक मूल्यों की कमी, छुआछूत व जाति भेदभाव के खिलाफ कई जन आंदोलन भी किए। वह लैंगिक न्याय, समानता और पुनर्विवाह के कट्टर समर्थक थे। छोटूराम की 2 बेटियां थी। उनको अच्छी शिक्षा दी तथा समाज को संदेश दिया कि लड़का लड़की में कोई अंतर नहीं है।

कुछ विचारकों ने छोटूराम की राष्ट्रीयता व देशभक्ति पर संदेह व्यक्त किया है। छोटूराम के सभी भाषणों व कानूनों का विश्लेषण किया जाए तो उनमें कोई भी ऐसी बात नहीं मिलती जो हिंदुस्तान के स्वराज्य के खिलाफ हो। छोटूराम की देशभक्ति का इससे बड़ा सबूत क्या हो सकता है कि उन्होंने मोहम्मद अली जिन्ना की पार्टी मुस्लिम लीग को संयुक्त पंजाब की राजनीति में दखल नहीं होने दिया तथा उनकी मृत्यु तक मुस्लिम लीग केवल एक या दो विधायक ही विधान परिषद में भेज पाई, जबकि संयुक्त पंजाब में मुसलमानों की आबादी हिंदुओं से काफी ज्यादा थी। उनकी मृत्यु के बाद 1946 में पंजाब विधान परिषद का इलेक्शन हुआ तथा मुस्लिम लीग सबसे ज्यादा सीट जीतने में कामयाब हुई, परंतु उनकी यूनियनिस्ट पार्टी ने कांग्रेस व अकाली दल से समझौता कर गठबंधन सरकार बनाई, परंतु जिन्ना ने ब्रिटिश सरकार से मिलकर गठबंधन सरकार को तुड़वा दिया तथा पंजाब विधान परिषद में पंजाब को दो भागों में बांटने का प्रस्ताव पास करवा दिया। इस बंटवारे से हजारों लोगों का नरसंहार हुआ। राजनीतिक चिंतकों का मत है कि यदि छोटूराम जिंदा होते तो पंजाब का बंटवारा न होता। छोटूराम ने आज से 100 वर्ष पहले ऐसी सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था की कल्पना की थी कि गांव व शहर के आर्थिक अंतर कम हो, धर्म का राजनीति में दखल न होना, फसलों का उचित दाम मिलना, सामाजिक भाईचारा मजबूत हो, छुआछूत की समाप्ति तथा शिक्षा का अधिकार सभी देशवासियों को मिलना, आज की वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों में छोटूराम की सोच प्रासंगिक है।

The Icon Singer is No More!

- R.N. MALIK

Hearts of millions of Indians and others were broken when they heard the sad news on 6th February 2022 that " Lata Didi is no more" Lata Didi had come to reside in the hearts of her innumerable fans and music lovers. Her living for 92 years proves that she was a very health conscience person, had control over her palate and led a highly disciplined life. She was still keeping a good health before the sudden infection of corona contracted from somebody attending her domestic chores. Her two contemporaries I.e. Rafi Sahib and Mukesh Ji had left us in tears 40 years ago. Fortunately, Asha and Suman Kalyanpur are still among us. Normally, a person bidding adieu at the age of 92 does not cause much pain but it sounds different in case of Lata Ji because she was residing both in hearts and minds of innumerable music lovers. Secondly, there was no female singer to take her place during this period of seven decades and she only ruled our hearts for the longest period. (Now it is said that Shreya Ghosal is as good a singer as Lata Ji was.) Such icons are born once in many centuries. Also the music she used to sing had also died long back along with the fading away of Music Maestros (Nausad, S-J, Ramchandran, Roshan,Madanmohan etc.) who composed the humming tunes which Lata, Rafi, Mukesh, Talat, Asha, Manna Dey and Kishore sang with perfection.

Lata Ji sang 5500 songs for Hindi films between 1946 and 2010. The span between 1950 and 1970 constitutes the golden period of Bollywood music because heart touching melodies were composed and rendered during this period only. Lata Ji sang 3100 songs during this span. Thereafter, the great bollywood music based on Sashtriya Sangeet and local dhuns, started transforming itself into noise and the process was complete by 1985.

Willium Shakespeare once said," Some are born great, some achieve greatness by dint of their hard work and to some, the greatness is thirst upon." Lata Ji belonged partly to both the categories. Many girls tried hard to pursue their singing career and

become another Lata Mangeskar but Alas! nobody came matching near Lata or Asha or Suman Kalyanpur. Only Anuradha Paudwal ascended some steps of the ladder but could not make her foothold in the Bollywood music and finally she devoted herself to singing devotional songs.

Lata burst on the Bollywood world in 1949 when she sang the haunting melody Ayega Aanewala of Mahal under the direction of Khem Chand Parkash. Earlier, Galam Haider, a famous musician of that era had spotted her singing talent and gave her break in Majboor in 1948. Thereafter, she never looked back till she herself decided to withdraw from the tinsel world. Earlier Noorjahan, Samshad Begam, Suraiya and Uma Devi (Tuntun) ruled the roost. Noor Jahan occupied the maximum space. But she decided to go to Lahore after the partition. Shamshad Begam and Suraiya tried to fill the void for two years but could not. In Mela (Dalip and Nargis), Shamshad Begum sang all the female songs but not with aplomb. So, Lata filled the void left by Noorjahan, completely and with perfection because her voice was melodious, slightly coarse, vibrating, resonating, soft and appealing. Movies like Barsat (Shankar- Jaikishan), Parchhain and Anarkali (C. Ramchandra) Deedar (Naushad) catapulted her to the highest pedestal of playback singing within no time. Asha Bhonsle and Usha Mangeskar, the two young sisters of Lata, were equally talented in the art of singing. Asha could not move forward because of her disturbed married life for some years. One does not know why Usha did not follow the footsteps of Lata. She sang some beautiful duets with Lata like Tumko Piya Dil diya (Shikari under G.S.Kohli) or Aplam-Chaplam (Azad under Naushad). Asha came back and joined her elder sister in Vachan when she sang beautiful song Chanda mama door ke under Ravi in 1954 but got a big break in C.I.D. next year under O.P. Nayyar. By that time, all Music Directors, except O.P. Nayyar and Ravi, had addicted themselves to compose tunes that suited the voice of Lata only. Asha and Kishore Kumar started dominating the singing domain only after R.D. Burman came on the scene in 1966 with a bang in Teesri Manjil i. (He had the knack of converting western tunes into Indian songs that were very much liked by the younger generations.) Like Asha, Kishore Kumar too was not getting due recognition of his talent in the face of Rafi Sahab and Mukesh.

Suman Kalyanpur joined film industry in 1954 when she sang for Darwaza under Naushad. Her voice matched a lot with that of Lata Ji but it did not have a wide range or versatility. Still Music directors should not have ignored her too much. She could display her full talent only when Lata refused to sing duets with Rafi Sahib for 8 years. Her total score on Hindi film songs is only 857. Lata had also become famous for singing Aalap just before the Mukhda as in Bedardi Balma tera sawan yaad karta hai in Arjoo. But Aalap sung by Suman before the start of the song Tumne pukara aur ham chale aye in Rajkumar was equally enchanting. Suman had in her voice what Lata lacked. Therefore, Music Directors of that era too have to be blamed for being partial and not giving equal opportunities to all the singers like Kishore, Manna Dey, Suman and Mahendra Kapoor.

Initially, Bollywood songs were heard and shared among townsfolk in major cities only. These were totally unheard in villages. Then Hemant Kumar came up with very beautiful songs in Nagin in 1954, Radio had reached the villages by that time. Young boys started humming the two beautiful songs sung by Lata (Man dole mera tan dole and Mera dil ye pukare). They did not know anything about Lata and Hemant Kumar but the two songs became the rage for rural folks and they started rushing to the cinema halls in the nearby towns thereafter.

Now, more music directors started coming to Bombay like Ravi, Salil Chaudhari, Chitragupta, N.Datta, Kalyanji Anand Ji, O.P.Nayyar, Laxmikant-Piareylal and Usha Khanna. Rajkapoor adopted Shankar-Jaikishan (S-J), Dalip Kumar adopted Naushad, Devanand adopted S.D.Burman and Devendra Goyal and B R.Chopra adopted Ravi as their favourites for their own productions. S-J bagged the maximum films during the 1950-60 decade and the duo rarely used any other female singer for their compositions other than Lata. Their fees was the highest and equal to that of the principal actor in the film. Each Music Director composed most enchanting tunes during this period and each new song was better than the other. Lata sang female songs for most Music Directors. O.P.Nayyar exclusively used the voice of Asha Bhonsle. Ravi used the voice of Lata and Asha both in equal numbers and this trend continued till 1970.

C.Ramchandra gave very superb music in Anarkali and all the ten female songs were sung by Lata Ji. Likewise, Nausad Sahib gave equally superb music in Mugle-Azam. There too most of the songs with very difficult tunes were rendered by Lata Ji. S-J composed memorable tunes for Lata like O Basanti, Pawan pagal (Jis desh mein Gangs behti hai), Ajao Sanam tadpte hain arman(Awara) Manmohan Krishan Murari (Sanjh aur Savers) Raja ki ayegi barat (Aah) Tera jalwa jisne dekha (Ujala),

Tere pyar ka sara alam kho baithe hain (Dil ek mandir) Tera mera pyar amar (Asli Nakli) etc. Roshan composed wonderful songs rendered by Lata

like Zindagi Bhar nahin bhulegi wo Barsat ki raat, Sansar se bhage firte ho (Chitralekha), Jo wada kiya wo nibhana padega (Tajmahal), Duniya mein aisa kahan sabka naseeb hai (Devar), Rahen na rahen ham (Mamta), Dil jo na kah saka (Bhigi raat)etc. Chitragupta composed memorable songs like Na to dard gaya na dawa hi mili (Kali topi lal roomal), Yaad meri unko bhi aati to hogi (Patang), Tie laga ke mana ban gaye janab hero (Bhabi), Dil ka diya jala ke gya ye kon meri tanhai mein (Akashdeep). Madan Mohan gave large number of memorable songs to Lata like Badli se nikla hai chand and Wo bhuli dastan (Sanjog), Jab hamne dastan apni sunai (Won kon thi), Hai isi mein pyar ki Abroo (Anpadh), Jab jab tumhe bhulaya (Jahanara), Jhoomka gira re (Mera Saya) etc. Ravi gave memorable songs for Lata like Wo dil kahan se laon (Bharosa) , jab chali thandi hawa(Do badan) Badle badle mere sarkar najar aate hain (Chaudhvin ka chand), sab kuchh luta ke hosh mein aye to kya mila (ek saal), aye mere dile nadan (Lighthouse) mujhe pyar ki jindgi dene wale (Pyar ka sagar), Tumhi mere mandir tumhi meri pooja (Khandaan) etc. Vasant Desai gave memorable songs like Dil ka khilona haye toot gaya (Goonj uthi shahnai), Ae malik tere bande ham (Do ankhen barah haath).Besides Nagin, Hemant Kumar gave memorable songs in Bees Saal Baad like Kahin deep jale kahin dil and Kahan le chale ho (Durgesh Nandani). Kalyan Ji Anand Ji gave the most memorable songs for Lata like Jis dil mein basa tha pyar tera (Saheli), Mujhko is raat ki tanhai mein awaj na do (Dil bhi tera ham bhi tere), Jis path pe chala us path pe mujhe (Yaadgar), Teri rahon me khade dil tham ke (Chhalia). Laxmi Piarey gave memorable songs to Lata like Mere dil mein halki si (Parasmani), Need nigahon ki kho jaati hai (Lutera), Yasomati mayan se bole Nandlala (Satyam shivam sundram), Chala bhi aa aja re Piya(Man ki ankhen). S.D.Burman composed memorable songs for Lata like Jise tu kabool karle (Devdas) Ankhon mein kya ji (Nau do gyarah), Jayen to jayen kahan (Taxi driver), Likha hai teri Ankhon mein (Teen devian), Katon se kheench ke ye anchal (Guide) etc.This way the list of beautiful songs rendered by Lata in her melodious voice is endless. It was this list of memorable and everlasting songs that made Lata a house hold name and queen of hearts of millions of music lovers by rendering these in her velvet like voice.

The credit for popularity of a song goes to three stakeholders I.e. lyricist, music director and the singer. The tune plays the pricipal part as it converts lyrics into a song with a humming tune. The melodious voice further adds colour to the song the way colours add beauty to the paintings. All the three features are complimentary to each other and interwined. Hardly 15% songs of film industry could become popular and memorable simply because the tunes of remaining 85% songs were not captivating and longlasting. Lyrics and melodious voice further added to the captivity potential of the songs. All our lyricists mainly Shailender, Shakeel, Majrooh, Hasrat, Rajendra Krishan, Sahir, Indivar and Anand Bakshi used choicest, impeccable and thoughtful words in their lyrics. At times, their words were penetrating and shearing the hearts of music lovers as in the song Mere dil mein halki si from Parasmani or Aurat ne janam diya mardon ko in Sadhna. Sahir did wonders in films like Pyasa, Gumrah, Kagaz ke Phool and the songs became legendary because of the satirical lyrics .Shailender did wonder in films like Anari, Guide and Haryali aur Rasta. It was the voice of Lata that finally added to the memorability of their songs. So the credit of singing all the memorable songs sung by Lata Ji will have to be shared equally with the composers and lyricists as well and the principal share should go to the music director for innovating the captivating tunes fitting with the situations in the film stories. It is the tune that first attracts the attention of the listener. Rehearsing for recording the song was a difficult process. Rafi Sahib lost his voice for some days after completion of the rehearsal drill for the song O Duniya ke Rakhwale of Baiju Bawra.

Lata Ji got her first filmfare award in 1959 for singing the famous song of Madhumati (Aja re Pardeshi). Her second award came in 1963 after singing the title song of Bees Sal Bad. Her third award came in1966 for singing Tumhi mere Mandir from Khandaan. Everybody was expecting the third filmfare award the next year as well for singing Katon se kheech ke ye anchal from Guide but it was awarded for Baharo phool barsao from Suraj. It was speculated that Shanker-Jaikishan manipulated the award. The awards were later given separately for male and female singers, music directors and lyricists and finally, Lata got seven filmfare awards in her career.

A slight comparison is needed with the three contemporary film singers of Lata. Suman Kalyanpur had more sweetness in her voice than Lata but had a limited range in her voice. Listen her two famous songs Na tum hamein jano (Baat ek raat ki) and Aaj kal tere mere pyar ke charche (Bramchari). So she

could not sing the tunes of Naushad or Ravi. Voice of Geeta Dutt had more softness and could not sing songs requiring higher pitch. But only she could sing the song Waqt ne kiya kya hasin sitam (Kagaz ke phool) composed by S.D.Burman. Voice of Asha was shriller or thinner than that of Lata. She could pull her vocal chords to greater extent than Lata without losing the compactness of her voice. But O.P. Nayyar and R.D. Burman did not produce tunes for Asha that could touch the strings of the hearts of the listeners. It was Ravi who brought out the best out of Asha. Lata could not do justice to those songs like Is traha toda mera dil kya mera dil dil na tha from Shehnai or Raat rat bhar jag jag kar from Pyar ka Sagar. Lata could sing the song Janu Sajan hoti hai kya from Baharon ke Sapne with a botched up voice while Asha could sing this song with greater ease. Likewise Asha could not sing some of the songs which Lata could sing with ease like the songs of Mugle-Azam. In fact, some tunes looked bewitching in the voice of Lata and vice-versa. Lata's voice lacked thinness and sharpness while Asha's voice needed more sweetness. When the two singers sang simultaneously in many duets(Jab jab tumhe bhulaya from Jahanara) their voices were not easily distinguishable.

Lata Ji sang 1138 songs during 1970s, 623 in 1980s, 288 in 1990s, 47 in 2000s and 4 during 2010s. But senior citizens do not appreciate the quality of these songs because they do not have the captivating tunes of the golden period. Likewise, middle aged people like the songs of 1970s but not of 1980s and beyond. The younger generation likes only the tadak-bhadak or the deafening noise of modern films. This Music is without any sur or lai. Lata Ji sang in 36 different languages. So her fan following at the global level had become a legion and she, in turn, had become a legendary figure. Her tally of awards is myriad but the title of Bharat Ratna and Dada Sahib Phalke award subsumed all other awards. She also had her share of controversies and speculations around her persona :some concocted, some half true and few factually correct. The main controversy revolves round her unwanted opposition to the construction of the flyover along the Peddar road (in front of her apartment in Mumbai) to ease the traffic congestion and the project ultimately had to be abandoned. She also dabbled a bit in politics and became Hindutvawadi. That attitude was also resented by the people and her fans. It is also said that Lata Ji grew like a banyan tree under which nothing else could grow. But Music Directors are more responsible than Lata Didi to create this schism. Otherwise her career had remained unblemished through her long inning of seven decades and to earn her the iconic status.

जीवनशैली बदलने से कम होगा कैंसर का खतरा

– डॉ मनोहर अगनानी

इस वर्ष 4 फरवरी को वर्ल्ड कैंसर डे की थीम 'क्लोज़ द केयर गैप' पर केंद्रित है। 'कैंसर' शब्द का जिक्र मात्र ही ज़ेहन में सिहरन पैदा कर देता है। ऐसे में जिन्हें कैंसर हो जाता है और जो लोग उनकी सेवा सुश्रुषा करते हैं, उनकी मनःस्थिति को तो बयां ही नहीं किया जा सकता। फिर कैंसर केयर से सम्बंधित विभिन्न चरणों, जैसे–डायग्नोसिस, सर्जरी, रेडियोथैरेपी, कीमोथैरेपी और पैलीएटिव केयर व्यवस्था में कुछ 'गैप' हों, तो कैंसर के मरीज़ों और रिश्तेदारों की निराशा का सिर्फ अंदाज़ा ही लगाया जा सकता है। इस दृष्टि से इस वर्ष की थीम प्रासंगिक है, क्योंकि किसी भी स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए केयर के मापदंडों पर शत–प्रतिशत खरा उतरना एक नामुमकिन सा आदर्श मात्र है। किसी व्यवस्था में स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव होगा, तो कोई व्यवस्था बहुत खर्चीली होगी। कहीं लोगों की जीवनशैली और परिवेश में कैंसर के रिस्क फैक्टर बहुतायत में होंगे और कहीं आम जनता का हेल्थ सीकिंग बिहेवियर एक चुनौती होगा। साथ ही कैंसर प्रभावितों को टर्मिनल स्टेज में पैलीएटिव केयर दे पाना भी एक बड़ी ज़रूरत है। निष्कर्ष यही है कि कैंसर केयर के हर स्तर पर अपेक्षाओं और वास्तविकताओं में गैप होंगे ही। कहीं ज्यादा, तो कहीं कम।

इस परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति (2017), आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना और प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के साथ कैंसर के क्षेत्र में किए जा रहे विशिष्ट प्रयासों का यहां उल्लेख करना प्रासंगिक है। आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, भारत सरकार द्वारा कॉम्प्रिहेंसिव प्राइमरी हेल्थ केयर सुनिश्चित करने की एक सुविचारित रणनीति है। देश में सभी उप–स्वास्थ्य केन्द्रों एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों को हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर के रूप में क्रियान्वित करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य प्रधानमन्त्री मोदी ने दिया है और आज देश में 89,000 से अधिक हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर के माध्यम से प्रिवेंटिव, प्रोमोटिव एवं कॉम्प्रिहेंसिव प्राइमरी हेल्थकेयर दी जा रही है। आशा एवं एएनएम द्वारा घर–घर जाकर 30 वर्ष से अधिक आयु की आबादी का पांच प्रमुख बीमारियों हाइपरटेंशन, डायबिटीज़ और ओरल, ब्रेस्ट एवं सर्वाइकल कैंसर के प्रारम्भिक लक्षणों के आधार पर पहचान का

काम किया जा रहा है और साथ ही कैंसर से बचाव के लिए जीवनशैली में परिवर्तन के लिए अपेक्षित जानकारी भी दी जा रही है।

निष्कर्ष के रूप में ये कहा जा सकता है कि कैंसर केयर के प्रारम्भिक स्तर पर गैप को क्लोज़ किए जाने का भरपूर प्रयत्न किया जा रहा है और इस प्रयास के सकारात्मक परिणाम भी परिलक्षित हो रहे हैं। हमारे देश में नेशनल प्रोग्राम फ़ॉर प्रिवेंशन एंड कंट्रोल ऑफ़ कैंसर, डायबिटीज़, कार्डियो–वस्कुलर डिज़ीज़ एंड स्ट्रोक के माध्यम से कैंसर के प्रमुख कारणों की रोकथाम एवं नियंत्रण का प्रयास भी किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कैंसर के प्रति जन जागरूकता स्थापित करने, जीवन शैली में सुधार करने के लिए जनमानस को प्रोत्साहित करने के साथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र एवं जिला अस्पतालों में एनसीडी क्लिनिक संचालित करना है। जिला अस्पतालों में सीटी स्कैन, एमआरआई, मैमोग्राफ़ी, हिस्टोपैथोलॉजी सेवाओं का विस्तार कर कैंसर के शुरुआत में ही पहचानने सम्बंधी गैप को भी ख़त्म किया जा रहा है।

आयुष्मान भारत– प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के माध्यम से देश की बड़ी आबादी को कैशलेस स्वास्थ्य सुविधा चुनिंदा सरकारी एवं प्राइवेट अस्पतालों के माध्यम से मुहैया कराई जा रही है और फिर देश में नए मेडिकल कॉलेज स्थापित करने, जिला अस्पतालों को मेडिकल कॉलेज में उन्नयन करने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सोच भी सेकेंडरी केयर को सुदृढ़ करने में कामयाब हो रही है। इसी प्रकार टर्शिअरी केयर का विस्तार करने के लिए चरणबद्ध रूप से देश में 22 एम्स स्थापित किए जा रहे हैं। साथ ही टर्शिअरी कैंसर केयर सेंटर्स स्कीम के तहत स्टेट कैंसर इंस्टीट्यूट और टर्शिअरी कैंसर केयर सेंटर्स स्थापित करने के लिए अनुदान दिया जाता है, जिसका उपयोग कैंसर के निदान एवं उपचार करने, कैंसर से सम्बंधित परीक्षण करने, रिसर्च गतिविधियां संचालित करने, पैलिएटिव केयर सुविधा उपलब्ध कराने और कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम में सहभागिता करने के लिए किया जा सकता है। झज्जर (हरियाणा) में 700 बिस्तर वाले 'नेशनल कैंसर इंस्टिट्यूट' और कोलकाता में 460 बिस्तर वाले 'चितरंजन नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट' भी प्रारंभ किए गए हैं। ये सभी प्रयास कैंसर केयर में सर्जरी, रेडियोथेरेपी, कीमोथैरेपी आदि क्षेत्रों में गैप क्लोज़ करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

ऐसा लगता है कि हमारे देश में कैंसर की रोकथाम के लिए जो प्रयास किए जा रहे हैं, वो ऐतिहासिक हैं। इन प्रयासों में सुधार की गुंजाइश तो हमेशा रहेगी, लेकिन अब बहुत बड़ी जिम्मेदारी हमारे देश के जनमानस, जिनमें से अधिकांश युवा हैं, की भी है, ताकि वो अपनी जीवनशैली को इस तरह से अपनाएं कि कैंसर की सम्भावना को न्यूनतम किया जा सके। संतुलित भोजन करें, योग और व्यायाम को अपनाएं, तम्बाकू एवं शराब का सेवन न करें। और उनकी यह कोशिश न सिर्फ उन्हें कैंसर की संभावना से बचाएगी, अपितु सीमित सेवाओं को गुणवत्तापूर्वक, कैंसर रोगियों को समय पर उपलब्ध कराकर इस वर्ष की थीम 'क्लोज़ द केयर गैप' को भी चरितार्थ कर सकेगी।

महिला उत्थान के पक्षधर थे लाला लाजपत राय

– विनय कपूर मेहरा, कुलपति
डॉ. बी.आर अम्बेडकर राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय

हरियाणा लाला लाजपतराय की कर्मभूमि रहा है। 28 जनवरी का दिवस लाला लाजपतराय जैसे दूरदृष्टा बहुयामी व्यक्तित्व को नमन करने का व उनके आदर्शों व दृष्टिकोण का अनुकरण करने का अवसर है। हम प्रायः लालाजी का स्मरण 'मेरे शरीर पर पड़ी एक एक लाठी ब्रिटिश सरकार के कफ़न में कील का काम करेगी' के उद्घोष से करते हैं, परन्तु लालाजी न केवल एक सच्चे देशभक्त, समाजसेवक, शिक्षाविद्, लेखक, ओजस्वी वक्ता, सफल वकील अपितु एक समर्पित समाज सुधारक भी थे। समाज के कमजोर वर्गों मजदूरों व स्त्रियों के बारे में उन्हें विशेष चिंता थी। उनका मानना था कि जब तक समाज के यह सभी वर्ग सबल और समान नहीं होंगे–राष्ट्र निर्माण का कार्य पूरा नहीं हो सकता। सशक्त समाज के लिए स्त्रियों का सशक्तिकरण एक आवश्यक शर्त है।

भारतीय स्त्रियों के प्रति लालाजी के मन में एक विशेष सम्मान, संवेदना व चिन्ता थी। उनका यह मानना था कि भारतीय समाज में औरतें भारतीय सभ्यता, संस्कृति, आदर्शों व मूल्यों की संरक्षक हैं। वे भारतीय समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का भंडार हैं। इन संस्कारों को एक से अगली पीढ़ी तक ले जाने का सशक्त माध्यम हैं। वह स्वयं के बारे में लिखते हुए रेखांकित करते हैं कि मेरी माता गुलाब देवी हमारे परिवार की एक आदर्श महिला थीं। मेरे सफल जीवन का सारा श्रेय मेरी माताजी द्वारा दिए गए प्रशिक्षण व संस्कारों को जाता है। एक अन्य जगह वह लिखते हैं कि मेरे पिताजी जो एक मौलवी अध्यापक के प्रभाव में थे–मेरी माताजी की दृढ़ इच्छाशक्ति व डर के कारण ही धर्म परिवर्तन नहीं कर सके, परन्तु 20वीं शताब्दी के शुरू तक भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा से विशेष रूप से चिंतित थे। यह

वह समय था जब उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय थी। बाल विवाह का प्रचलन था। 1891 के विवाह सम्बन्धी कानून द्वारा लड़कियों की विवाह के लिए न्यूनतम आयु 10 वर्ष से बढ़ा कर 12 वर्ष की गई थी। यह छोटी–छोटी बच्चियां जो अल्प आयु में ही गर्भवती हो जाती थीं के लिए घोर अत्याचार था। इनकी दशा सन्तान उत्पति के यंत्र के समान थी। कमजोर व अविकसित होने के कारण माताओं और बच्चों की मृत्युदर भी अत्यधिक थी। 1920 में प्रत्येक पीढ़ी ने 32 लाख से अधिक माताओं की प्रसव के दौरान मृत्यु देखी है। पुरुषों का पुनर्विवाह आम बात थी, परन्तु विधवा स्त्रियों की शादी सामाजिक तौर पर प्रतिबंधित थीं। इसके साथ साथ ही देवदासी, सती, व बहुपत्नी प्रथा प्रचलित थी, जिसका समाज में बहुत कम प्रतिशोध था। महिलाओं में साक्षरता दर 1911 तक 10 प्रति हजार थी। इस प्रकार हिन्दू समाज का लगभग आधा भाग (महिलाएं) शारीरिक, सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से अत्यंत कमजोर व हीन अवस्था था।

लालाजी समाज को एक आंगिक स्वरूप मैं देखते थे जिसमें शरीर के प्रत्येक अंग का स्वस्थ होना अति आवश्यक है, अन्यथा यह रुग्ण या अपंग व्यक्ति के समान है। अतः वह औरतों के अधिकारों व सम्मान के प्रति पूर्ण सजग थे तथा उन्हें उचित स्थान दिलाने के लिए प्रयत्नशील भी। लालाजी के अनुसार 'आज सबसे अधिक आवश्यकता हमें अपनी माताओं का सर्वोत्तम ध्यान रखने की है। एक हिन्दू के लिए औरत एक लक्ष्मी है, सरस्वती एवं शक्ति का सामूहिक प्रत्यक्ष रूप है। वह सभी प्रकार की शक्ति, सुंदरता और आशाओं का आधार है।' माताएं समाज की निर्माता हैं, यदि उनका स्वयं का स्वास्थ्य ठीक नहीं होगा, यदि वे बलिष्ठ नहीं होंगी तो समाज से हम किसी प्रकार की बेहतरी की उम्मीद नहीं कर सकते। उनके अनुसार एक राष्ट्र जो अपनी माताओं के बन्धनों व उन पर होने वाले अत्याचारों को सहन करता है किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता के बारे में प्रगति नहीं कर सकता। स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए लालाजी ने सर्वप्रथम स्त्री शिक्षा पर बल दिया। अपनी पुस्तक 'द प्रॉब्लम ऑफ नेशनल एजुकेशन इन इंडिया' में न सिर्फ उन्होंने स्त्री शिक्षा बल्कि सह–शिक्षा का भी भरपूर समर्थन किया। आज से 100 वर्ष पूर्व जब लड़कियों को पढ़ने के लिए नहीं भेजा जाता था यह एक क्रांतिकारी सोच थी। उनकी यह मांग थी कि प्रत्येक जिले में लड़कियों के लिए कम से कम एक राष्ट्रीय विद्यापीठ होना चाहिए जिसमें उनके लिए खेलकूद के मैदान के साथ व्यायामशाला भी अवश्य हों, ताकि हमारी लड़कियां शिक्षित, स्वस्थ व सुडौल हों। उनका सर्वपक्षीय विकास सुनिश्चित हो। 1926 में सर गंगाराम के सहयोग से उन्होंने लाहौर में विधवाओं के लिए भी पाठशाला खुलवाई। जब उनकी अपनी बेटी पार्वती देवी के पति का 1907 में स्वर्गवास हो गया तो उन्होंने उसे भी आत्मनिर्भर और राजनितिक–सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय होने की प्रेरणा दी। वह स्त्रियों के सशक्तिकरण के पक्षधर थे। उनके अनुसार भारत में उनकी दयनीय स्थिति का अन्य कारण उनकी आर्थिक निर्भरता थी। इसके लिए शिक्षा के साथ–साथ वह उनकी सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के पक्षधर थे। वह पुरुष व स्त्रियों के समान अधिकारों व अवसर के कट्टर समर्थक थे। उनके अनुसार यह दोनों आपस में सहयोगी होने चाहिए न कि उनमें निर्भरता, दासता या तुच्छ होने की भावना हो। उन्होंने स्त्रियों को सम्बोधित करते हुए उन्हें हीन भावना का त्याग करते हुए प्रगतिशील, तर्कशील होकर समाज के सभी जीवन में अग्रसर होने का आह्वान किया। समान योग्यताओं वाली किसी भी स्त्री के लिए वह सभी अवसर एवं अधिकार प्राप्त हों जो किसी भी पुरुष के लिए उपलब्ध हैं।

लालाजी एक व्यावहारिक व्यक्ति थे। उन्होंने अपने लेखों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं के द्वारा जनसभाओं व सरकारी तंत्रों के माध्यम से महिलाओं की समस्याओं के प्रति न सिर्फ जागरूकता पैदा की अपितु उसके उन्मूलन के लिए भी भरसक प्रयास किए। जहां भी उन्हें महिलाओं के सशक्तिकरण की किरण दिखाई थी, तुरन्त उसे समर्थन देकर आंदोलन का रूप देने का प्रयास किया। शिक्षित व प्रतिष्ठित महिलाओं जैसे बड़ोदा की महारानी की अध्यक्षता में पूना में 'महिला सम्मेलन'; अहमदाबाद में जेसी बोस की पत्नी द्वारा 'महिला सम्मेलन' की अध्यक्षता लालाजी के लिए हर्ष व उत्सव के विषय थे। जब 1928 में स्त्रियों की भलाई संबधी नीति निर्माण के लिए भारतीय महिला शैक्षिक सम्मेलन का आयोजन हुआ तो लालाजी के शब्दों में 'यह दिन देवताओं के देखने और खुशी मनाने का दिन है।' अंततः लालाजी औरतों की समस्याओं के बारे में विशेष रूप से चिन्तित थे। उनका यह पूर्ण विश्वास था की राष्ट्र उत्थान स्त्रियों की दशा में सुधार बिना असंभव है। वह उनके द्वारा समाज में एक सम्मानपूर्वक, सकारात्मक भूमिका की आकांक्षा रखते थे। उनके प्रयत्न इस दिशा में सकारात्मक स्वरूप में प्रफुल्लित हो रहे हैं। देश महिलाओं के सर्वपक्षीय विकास, सशक्तिकरण के फलस्वरूप लालाजी के सपनों को साकार करने की दिशा में अग्रसर है। यही उस महान आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। नमन।

असमानता-वह वायरस जो समाज के गुणों को मार देगा

– डॉ. एस एस सांगवान

21 अंतर्राष्ट्रीय चैरिटेबल ऑर्गनाइजेशन के कंसोर्टियम द्वारा 16 जनवरी 2022 को जारी ऑक्सफैम रिपोर्ट में कहा गया है कि कोविड की अवधि के दौरान, असमानता का वायरस न केवल जीवित रहा है, बल्कि और बढ़ गया है। इस मुद्दे को उजागर करने के लिए विश्व आर्थिक मंच के दावोस एजेंडा से पहले यह रिपोर्ट पेश की गई। इसके आंकड़ों से पता चलता है कि मार्च 2020 से नवंबर 2021 तक असमानता का सीमा से आगे बढ़ गया है, आज इसे 'असमानता की मार' का उपयुक्त शीर्षक दिया गया है। वैश्विक स्तर पर, इस अवधि के दौरान शीर्ष 10 अमीरों की संपत्ति दोगुनी हो गई है। अक्टूबर 2021 की फोर्ब्स की अरबपतियों की रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि उनमें से 80 प्रतिशत से अधिक ने 2021 से अपनी निवल संपत्ति में वृद्धि की है। ऑक्सफैम 'इंडिया सप्लीमेंट 2022' के अनुसार, भारत में अरबपतियों की संख्या 2020 में 102 से बढ़कर 142 हो गई है। 2021 में, अरबपति गौतम अडानी की संपत्ति आठ गुना और मुकेश अंबानी की संपत्ति दोगुनी हो गई है। अशोक विश्वविद्यालय (सीईडीए) में आर्थिक डेटा और विश्लेषण केंद्र के अनुमान के अनुसार देश की मध्यम आय वर्ग की आबादी 32 मिलियन तक सिकुड़ गई है, गरीबी की हेडलाइन गिनती जो 2011 में 340 मिलियन से घटकर 2019 में 78 मिलियन हो गई थी, 2020 में फिर से 134 मिलियन हो गई है जो कि गरीबी के खिलाफ भारत की लड़ाई का उलट है।

असमानता का दानव संसाधनों, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, और बिगड़ते पर्यावरण और यहां तक कि सामाजिक लोकाचार और मूल्यों तक पक्षपाती पैदा कर रहा है। अरबपति राजनीतिक दलों को धन देकर अपने पक्ष में नीतियों और आवंटन में बदलाव कर सकते हैं। इस तरह क्रोनी कैपिटलिज्म बढ़ रहा है। असमानता के सामाजिक कनी प्रभाव को संस्कृत नीति श्लोक के माध्यम से अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

यौवनं धन सम्पतिः प्रभुत्वमविवेकिता,
एकिकामप्यनार्थाय किमू यत्र चतुर्ष्ठयम्।

इसका अर्थ है बाहुबल (युवा), धन, अधिकार, ज्ञान की कमी में से किसी एक का अधिक संचय एक व्यक्ति/परिवार को बुराइयों की ओर उन्मुख करता है, यदि चारों किसी व्यक्ति/परिवार के साथ हों तो इसका परिणाम कयामत का दिन हो सकता है। जीवन में मानसिक और शारीरिक श्रम से आय अर्जित करने वाला व्यक्ति कभी भी समाज के लिए दुष्ट नहीं होगा लेकिन यदि एक अयोग्य व्यक्ति को बिना परिश्रम के धन विरासत में मिलता है, तो वह निश्चित रूप से भ्रष्ट आचरण, अनैतिक कार्य और हिंसा में लिप्त होगा?

असमानता के इस वायरस को मारना होगा नहीं तो यह समाज के गुणों को मार देगा। असमानता में कमी के लिए दोतरफा रणनीति की आवश्यकता हो सकती है। सबसे पहले, गरीबों को लाभान्वित करने वाली सुविधाओं जैसेय सरकारी स्कूल, अस्पताल, सार्वजनिक परिवहन, सार्वजनिक वितरण प्रणाली और सामाजिक सुरक्षा, में उच्च आवंटन किया जा सकता है । यह अच्छी तरह से प्रलेखित है कि बिना सरकारी सेवा के परिवार में बीमारी पर खर्च उसे बर्बाद कर देता है। इसके अलावा, निजी स्कूलों में मोटी फीस कम आय वाले परिवारों की लगभग एक तिहाई आय ले रही है। सरकारी स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से न केवल गरीब परिवारों का खर्च बचेगा बल्कि उनके बच्चों को रोजगार के योग्य भी बनाया जा सकेगा। इसके अलावा, ये सुविधाएं उन लोगों के लिए मुद्रास्फीति को बेअसर कर देंगी जिनकी मजदूरी और आय किसी महंगाई भत्ते से जुड़ी नहीं है।

दूसरा संबंधित मुद्दा कल्याणकारी उपायों के लिए संसाधन जुटाना होगा। समय के साथ विशेष रूप से जीएसटी(GST) के लागू होने और कॉरपोरेट टैक्स में कमी के बाद से सरकार अप्रत्यक्ष करों पर अधिक निर्भर होती जा रही है। इसका मतलब समाज के निम्न–आय वर्ग के लोगों पर अधिक कर लगाना है। जबकि, अधिकांश विकसित देश अपनी असमानता को कम करने के लिए संपत्ति कर या विरासत कर या दोनों के माध्यम से प्रत्यक्ष कर बढ़ा रहे हैं। संपत्ति कर छूट की सीमा के बाद किसी व्यक्ति की संपत्ति (नकद बैंक जमा, अचल संपत्ति, आदि) पर सालाना लगाया जाता है, जबकि विरासत कर या संपत्ति शुल्क, किसी व्यक्ति की मृत्यु के समय संपत्ति के बाजार मूल्य पर छूट की सीमा के बाद लगाया जाता है। दुनिया में सबसे अधिक संपत्ति कर पुर्तगाल में 61.3 प्रतिशत, स्लोवेनिया में 61.1 प्रतिशत, बेल्जियम में 58.4 प्रतिशत, फ्रांस में 2.166 प्रतिशत और स्पेन में 2.618 प्रतिशत है और, बड़े देशों में औसतन लगभग 2 प्रतिशत है। इसी तरह, देनदारियों और छूट की कटौती के बाद किसी व्यक्ति की मृत्यु के समय संपत्ति या संपत्ति के बाजार मूल्य पर विरासत कर लगाया जाता है। विरासत कर जापान में 55 प्रतिशत, दक्षिण कोरिया में 50 प्रतिशत, फ्रांस 45 प्रतिशत, यूके में 40 प्रतिशत, संयुक्त राज्य अमेरिका में 40 प्रतिशत और जर्मनी में 30 प्रतिशत है।

जबकि, भारत ने उपरोक्त दोनों करों को समाप्त कर दिया है। 1953 में शुरू की गई संपत्ति शुल्क 1985 में समाप्त कर दी गई थी जब वीपी सिंह कांग्रेस के वित्त मंत्री (एफएम) थे। असमानता के वायरस को विशेष रूप से 1991 से फलने–फूलने के लिए अनुकूल नीतिगत वातावरण प्रदान किया जा रहा है। हालांकि इसका प्रभाव समाजवादी नेता और तत्कालीन एफएम मधु दंडवते द्वारा महसूस किया गया था, जब उन्होंने 1991 का केंद्रीय–बजट इन शब्दों के साथ प्रस्तुत किया था, "गरीब लोगों का एक विशाल बहुमत" चुपचाप पीड़ित हैं जबकि कुछ लोग शानदार अलगाव (splendid isolation) में रह रहे हैं। लेकिन अमीर और गरीब के बीच की खाई को पाटने के लिए कोई ठोस नीति नहीं अपनाई गई। यहां तक कि 2016 में वेल्थ टैक्स भी खत्म कर दिया गया था जब अरुण जेटली बीजेपी के एफएम थे। प्रत्येक बजट से पहले मौखिक चर्चा होती है लेकिन सरकार ने कोई कर लाने की हिम्मत नहीं की है। विमुद्रीकरण और जीएसटी जैसे साहसिक फैसलों के लिए जानी जाने वाली वर्तमान केंद्र सरकार, भविष्य की पीढ़ियों, विशेषकर गरीबों को असमानता के इस दानव से बचाने के लिए इन करों को फिर से शुरू करने पर गंभीरता से विचार कर सकती है।

भरतपुर साम्राज्य और जाट विरासत

– सूरजभान दहिया

कृषि भारत की पवित्र आत्मा है और इस पवित्र आत्मा के देश की पुनीत वीर वसुंधरा पर किसान इसके प्रतिनिधि हैं। आधुनिक भारत के जाट इतिहास में उत्तरी भारत के किसान को जिसने संरक्षण, सम्मान एवं स्वतंत्रता दी वे किसान वेशभूषा में नरेश थे– महानायक सूरजमल। सूरज के सम सूरजमल तेजोमय शक्ति द्वारा भरतपुर साम्राज्य को 'जाट हैरीटेज' के रूप में सुशोभित करके जाट समुदाय को उनका कृतज्ञ बना दिया। भरतपुर, अलवर, धौलपुर, आगरा, बुलंदशहर, सहारनपुर, मथुरा, होडल, रोहतक, पलवल, गुडगांव, बल्लभगढ़, रेवाड़ी, हांसी, अलीगढ़, हाथरस, मैनपुरी तथा दिल्ली, आगरा के आस–पास के क्षेत्र महाराजा सूरजमल का शांति और समृद्धि भरा शासन था। उनकी राजनीतिक क्षमता, संगठन कौशल, नेतृत्व की प्रतिमा आदि गुणों की तुलना शिवाजी महाराज एवं महाराजा रणजीत सिंह से भली–भांति की जा सकती है। वे एक सफल यौद्धा ही नहीं बल्कि वे राष्ट्रवाद के प्रतीक थे। महाराजा सूरजमल ने विदेशी आक्रांताओं को भारत में प्रवेश न करते हुए पंजाब और राजपूताना के शासकों को पुष्कर में आमंत्रित करके सुदृढ़ रणनीति को क्रियान्वित की। उन्होंने अपने साम्राज्य में मंदिर, मस्जिद एवं गुरूद्वारों के निर्माण करके भरतपुर को एक सैकूलर सुदृढ़ राज्य में परिभाषित किया था। वे किसी एक जाति, धर्म अथवा वर्ग के शासक नहीं थे अपितु देश की प्रभुता, संस्कृति, कृषि संपदा को सुरक्षित रखने के सजग प्रहरी थे, इससे उनको 'जाट प्लेटो' कहा जाये अथवा किसान चाणक्य– आज वे किसान समुदाय के दिल में समाये हुये हैं, एक अद्वितीय ऐतिहासिक विभूति जो आज जाट कौम की प्रेरणा शक्ति बनी हुई हैं। भरतपुर अब जाट चौधर का तीर्थस्थल हैं। राजा बदन सिंह ने अपने राज्य की बागडोर युवराज सूरजमल को वर्ष 1745 में संभलवा दी थी। युवराज की प्रखर प्रतिभा का उल्लेख करना यहां उचित होगा। वर्ष 1749 में जयपुर की गद्दी हेतु दो युवराजों माधों सिंह एवं ईश्वर सिंह में द्वंद्व चल रहा था। माधो सिंह को मराठों, सिसोदियों तथा राठौड़ों का समर्थन प्राप्त था। ईश्वर सिंह को जयपुर के जागीरदार एवं भरतपुर के कुंवर सूरजमल सहायता कर रहे थे। यह युद्ध तीन दिन चला, पहले दो दिन युद्ध माधो सिंह के पक्ष में रहा। तीसरे दिन बगरू युद्ध की कमान ईश्वर सिंह ने कुंवर सूरजमल को दी। कुंवर सूरजमल एक कुशल योद्धा, एक उत्कृष्ट राजनीतिज्ञ और प्रबल सैन्य संगठनकर्त्ता थे। उनमें हारी हुई बाजी जीतने की निपुणता एवं दृष्ट इच्छा शक्ति थी– हार मानना, झुकना या पीठ दिखाना उनके स्वाभावों में नही था। कुंवर सूरजमल इस लड़ाई में इतनी वीरता एवं कौशलता से लड़े कि जयपुर की रानियां उनके कौशल को देखकर उत्तेजित हो गई। एक रानी ने यह भी पूछ डाला कि यह वीर योद्धा कौन से राजघराने के हैं, जो दोनों हाथों से तलवार चलाकर दुश्मन के छक्के छुड़ा रहा है। ऐसा वीर योद्धा पहले तो कभी नहीं देखा। यह सुनकर हाडौती के कवि ने बतलाया–

'नही जाटनी ने सही पीड़ा व्यर्थ प्रसव की।
पीर, जन्मा उनके गर्भ से सूरजमल सा वीर।।''

इस हारी हुई लड़ाई को सूरजमल ने जीत में बदल दिया और कुंवर सूरजमल ने मराठों, सिसोदियों और राठौडों को एक साथ हराकर अपने नाम का डंका सारे उत्तरी भारत में बजा दिया तथा जाट संस्कृति को महिमा मंडित कर दिया–

''हरया वो जानिये जो कहे हार की बात।''

राजा बदन सिंह की 9 जून, 1756 को मृत्यु हो गई तथा इसके पश्चात् पुत्र सूरजमल विधिवत भरतपुर के नरेश बने। उन्होंने तुरंत ब्रज, हाथरस, मुरसान, सहारपुर, बिजनौर तथा बल्लभगढ़ के जाट सरदारों की तितर–बितर शक्ति को

संगठित करके एक सुदृढ़ जाट शासन की नींव रखी तथा उसका वृहद विस्तार किया। सशक्त जाट भाईचारे को बनाने हेतु उन्होंने अच्छे जाट घरानों में शादियां की तो कूटनीति में भी श्री कृष्ण जैसी नीतियों को अपनाया। फिर चालबाज मराठों एवं साजिश रचने वाले धोखेबाज अफगानों का उन्होंने सफलतापूर्वक सामना किया– बस योद्धाओं में सूरजमल भीम थे तो अर्थशास्त्र के मामले में कौटिल्य रहे। 1761 में पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठों ने अहमदशाह अब्दाली के विरूद्ध युद्धनीति में महाराजा सूरजमल का परामर्श स्वीकार नहीं किया तथा मराठे युद्ध हार गये। फिर भी अब्दाली की इच्छा के विपरीत महाराजा सूरजमल ने मराठों की महिलाओं, बच्चों तथा सैनिकों को पनाह दी तथा सुरक्षित उन्हें ग्वालियर पहुंचा दिया। एक विदेशी लेखक कीन लिखते हैं कि ''यदि मराठा शासक भाऊ ने सूरजमल के सुझावों पर अमल किया होता तो अब्दाली कभी सफल नहीं होता और हिंदुस्तान का समूचा इतिहास कुछ और होता, वैसा नहीं जैसा उस समय बन गया।'' महाराजा सूरजमल द्वारा मराठा को जो सम्मान दिया गया, उससे अब्दाली ने भरतपुर को झुकाने हेतु दिल्ली से भरतपुर की ओर कूच किया। राजनैतिक परिस्थितियां पल–पल बदलती रहती है। पानीपत की लड़ाई में मराठे हार जाने के पश्चात् पचास हजार सैनिकों के साथ दिल्ली की ओर पुनः नाना साहब पेशवा आ रहे थे। अब्दाली के सैनिक वैसे ही महाराजा सूरजमल की सैनिक शक्ति से भयभीत थे और अब्दाली घबराकर भरतपुर के स्थान पर अफगानिस्तान की ओर लौट गया। पेशवा ने दिल्ली पहुंचकर अफगानों की सत्ता छीन ली, परंतु जून के मास में मात्र 41 वर्ष की आयु में पेशवा का निधन हो गया तथा दिल्ली में अनिश्चितता का वातावरण उत्पन्न हो गया।

महाराजा सूरजमल का संकल्प था कि वे दिल्ली को जाट साम्राज्य की राजधानी बनाये। इस वातावरण में उन्होंने दिल्ली को तीन तरफ से घेर लिया तथा गोलाबारी शुरू कर दी। दिल्ली में रूहेन नजीबुद्दौला इस स्थिति का फायदा उठा रहे थे। रूहेल भरतपुर के वीरों की मार पर पीछे हटते जा रहे थे। महाराजा सूरजमल शाहदरा से युद्ध का संचालन कर रहे थे। महाराजा हिंडन नदी को पार कर आगे बढ़े तो छिपे रूहेलों ने एकटक गोलाबारी कर दी, जिससे महाराजा सूरजमल को प्राण–घातक चोट लग चुकी थी और 25 दिसंबर 1763 को जाट–कुल भूषण का निधन हो गया तथा कुशलनीतिज्ञ का भारत की पूर्ण स्वतंत्रता तथा दिल्ली को पुनः जाट हस्तीनापुर राजधानी बनाने का संकल्प पूर्ण नहीं हो पाया। इतिहास समीक्षक लिखते हैं– ''महाराजा सूरजमल की पुष्कर राजनैतिक दूरदर्शिता इस बात की पुष्टि करती है कि बाह्य शक्तियों द्वारा भारत का बचाव केवल सभी शासकों की एकता ही है। 1757 में अंग्रेजों ने प्लासी युद्ध जीत लिया था जो भविष्य में भारत की दासता की ओर धकेलने को इंगित कर रहा था। इस समय महाराजा सूरजमल का निधन भारत को निकट भविष्य में अंधकार की ओर ले जाने का संकेत दे गया। महाराजा सूरजमल का भारत स्वतंत्रता के प्रति समर्पणता निःसंदेह एक कुशल प्रशासक की परिचायक थी।'' प्लासी युद्ध में अंग्रेजों की जीत होना स्पष्ट हो गया। 1803 में जब दिल्ली अंग्रेजों के अधीन हो गई तो गोरे भारत के नये शासक हो गये। वे किसानों पर भू–कर लादकर सभी तरह के अत्याचार करने से संकोच नहीं कर रहे थे। जन साधारण का शोषण असहनीय देखकर जाट युवा नरेश नाहर सिंह अंग्रेजों के विरूद्ध मोर्चा खोलने के लिये आये। उन्होंने दिल्ली के समीप अलीपुर गांव में एक नीति निर्धारण की जिसमें उन्होंने सभी खापों का सहयोग मिला। भारत में स्वतंत्रता का प्रथम बिगुल बजा। बल्लभगढ़ नरेश नाहर सिंह ने दिल्ली से अंग्रेजों को खदेडकर लाल किले से एक उद्घोषणा की ''खल्क खुदा का, मुल्क बादशाह का, अमल अवाम का।'' बल्लभगढ़ नरेश अपने इतिहास का मनन करके आगे बढ़े, जाट इतिहास को जीवित रखा– भरतपुर नरेश सूरजमल की स्वतंत्रता ज्वाला को उन्होंने प्रज्जवलित रखा। उनके प्रयास को देसी रियासतों के कुछ शासकों ने सफल नहीं होने दिया, क्योंकि उनकी गुलामी की मानसिकता ने अंग्रेजों का साथ दिया। राजा नाहर सिंह ने इतिहास की पराधीनता एवं पश्चिमी सभ्यता की मानसिक गुलामी तथा आत्महीनता, शोषण, तिरस्कार आदि की मुक्ति हेतु फांसी का फंदा चुमते हुये एक संदेश दिया– ''यह दीपक बुझ न पाये।''

जाट विरासत को आगे बढ़ाते हुए एक और जाट दिव्यशक्ति राजा महेंद्र प्रताप ने भारत को अंग्रेजों की गुलामी से निजात दिलाने का बीड़ा उठाया। उनके मन में स्वतंत्रता की प्रबल भावना जागृत हुई, वे विचलित हो उठे कि एक तरफ राजा–महाराजाओं का भोग विलास से भरा वैभवपूर्ण जीवन एवं दूसरी ओर दरिद्रता से परिपूर्ण किसानों, मजदूरों, कामगारों का व्यथापूर्ण जीवन। उन्हें अपने वैभवपूर्ण जीवन से वैराग्य पैदा हो गया और अपना सर्वस्व देश की आजादी पाने के लिए समर्पित कर दिया। वे अंग्रेजों से आजादी पाने के लिए विदेशी शासकों से संपर्क में जुट गये। अनेक देशों की यात्रा की, वहां के शासकों से उन्हें भारत की स्वतंत्रता हेतु सहयोग मिला। 1 दिसंबर 1915 को उन्होंने काबुल में अपने जन्मदिवस पर भारत की अस्थाई सरकार की स्थापना की। इसमें आप प्रेसीडेंट, मौलाना बरकत बुल्लाह खां प्रधानमंत्री तथा मौलाना हबीदुल्लाह खां गृहमंत्री बने। उनके अथक प्रयासों से स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार विदेशी भूमि पर चलती रही। जापान के

चुकाव शहर में 26 जनवरी 1927 को प्रथम भारत का स्वाधीनता दिवस मनाया गया। अब 26 जनवरी हम गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं उन्होंने साढे 31 साल विदेशी भूमि से स्वतंत्र भारत की सरकार चलाई तथा 9 अगस्त 1946 को उन्होंने भारत माता में आकर नमन किया और 15 अगस्त 1947 को विधिवत रूप से भारत स्वतंत्र हो गया। भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजा महेंद्र प्रताप को हमारा शत्–शत् प्रणाम। उनकी स्मृति में उत्तर प्रदेश में एक विश्वविद्यालय की स्थापना हो रही है। जाट कौम के अतीत एवं पूर्वजों का यशोगान इस पर गर्व–गौरव की अनुभूतिपूर्ण इतिहास प्रस्तुत करता है। अब इतिहास प्रमाणित करता है कि भारतीय स्वतंत्रता की त्रिविभूतियां– राजा सूरजमल, नाहर सिंह एवं राजा महेंद्र प्रताप सदैव वंदनीय एवं प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी। भारत में लोकतंत्र प्रक्रिया भारत के 1935 एक्ट के तहत शुरू हुई। 1937 में भिन्न–भिन्न प्रांतों में एसेंबली के चुनाव हुये। पंजाब में इस चुनाव के प्रचार हेतु पं. जवाहर लाल नेहरू लाहौर गये। वहां पर पंडित जी को सुनने कुछ लोग ही आये, पंडित जी के साथ वहां बुल्लाभाई देसाई भी गये थे। उन्होंने लाहौर के एक बाजार में जाकर लोगों से पूछा– ''आप देश के इतने बड़े कांग्रेस नेता पं. जवाहर लाल का भाषण सुनने क्यों नहीं आये?'' लोगों का उत्तर था– ''ईत्थे तां इक्को बड्डा नेता है– छोटूराम'' जब यह हकीकत देसाई साहब ने नेहरू जी को बताई तो वे सहम गये तथा बड़े मायूस हुए। नेहरू जी पहले ही राजा महेंद्र प्रताप की महानता एवं उनकी देश–विदेशों में लोकप्रियता से चिंतित थे। राजा महेंद्र प्रताप सज्जन, स्पष्टवादी एवं राष्ट्रप्रेमी थे। जब वे भारत लौटे तो वे शिष्टाचार के नाते गांधी से मिलने चले गये। वह मुलाकात एक भावना प्रधान महामानव की एक चतुर राजनीतिज्ञ के बीच थी जो वकील भी रहा था और जिसकी अधिकांश शब्दावली द्विआर्थक होती थी और वह भोला–भाला आत्मप्रधान साधक एक चतुर राजनीतिज्ञ की ईमानदारी पर विश्वास करके उसके वाक्जाल का शिकार हो गया। स्वतंत्र भारत में गांधी–नेहरू की राजनैतिक डिप्लोमेसी के तहत राजा महेंद्र प्रताप को राजनैतिक मंच पर अनेक अवरोधक उत्पन्न करके चमकने नहीं दिया, वे 1957 से 1962 तक लोकसभा के सदस्य रहे। उनका त्याग, तपस्या, धैर्य सदैव स्मरणीय रहेगा। सफलताओं का मापदंड ही व्यक्ति का सही मूल्यांकन नहीं। राजा साहब स्वयं में क्या थे, यह समझना होगा। इसका निर्णय इतिहास करेगा, समय करेगा, हम करेंगे– समय एवं सत्य सबसे न्यायधीश होते हैं, इतिहास की वे महाशक्ति थे।

अंत में चौधरी चरण सिंह के जाट इतिहास के परिपेक्ष्य में उनके विचार–दर्शन को भी समझना होगा। महात्मा गांधी और चौधरी चरण सिंह के ग्रामवाद और कृषि दर्शन में समानता थी परंतु पंडित नेहरू चौधरी चरणसिंह के क्रांतिकारी राजनैतिक पथ का पथिक बनकर अपने आप को बौना नहीं बनाना चाहते थे। चौधरी चरण सिंह ग्राम स्वराज के पक्षधर थे। वे भारत के प्रधानमंत्री तो बने पर अल्पकाल के लिए अतएव वे भारत में किसान राज न ला सके जैसा चौधरी छोटूराम ने पंजाब में लाया था। इंडिया बनाम भारत आंदोलन के माध्यम से एक और जाट हस्ती चौधरी देवीलाल भारत के उप प्रधानमंत्री बने, परंतु वे अल्पकाल नायक रहे। इतिहास हमें अवसर देता है कि हम आगे बढ़ने हेतु इतिहास की समीक्षा करे। जाट कौम अपने इतिहास प्रति निष्ठावान नहीं है, इसलिये आज वह राजनैतिक पटल पर हाशिये में चली गई है। हमारा आधुनिक इतिहास महाराजा सूरजमल, राजा नाहर सिंह, राजा महेंद्र प्रताप, चौ. छोटूराम, चौ. चरण सिंह तथा चौ. देवीलाल – शष्ट दिव्य आत्माओं के इर्द–गिर्द घूमता है, पर इस काम का सही विश्लेषण नहीं हो पाया है। अतएव आज जाट कौम दिशा भ्रमित है– सघन चिंतन की आवश्यकता है। भारत का इतिहास किसान इतिहास है इसे संजोय रखना होगा। बहादुर कौमों की अपनी गरिमा होती है, फितरत होती है, जिसे इतिहास उचित सम्मान भी देता है। कवि प्रदीप ने 'ए! मेरे वतन के लोगों.....' गाने को लिखते यह भी स्वीकारा था– ''कोई सिख, कोई जाट, कोई मराठा.....' निष्कर्ष ये बहादुर कौम सदैव देश की सुरक्षा की सजग प्रहरी रही हैं। अति पीड़ा है कि रागदरबारी इतिहासकारों ने जाट कौम के इतिहास को गायब कर दिया था। परंतु अब प्रमाणित इतिहास इस कौम की देश के प्रति समर्पणता को स्वीकार कर रहा है। हमें भी आत्ममंथन करना होगा कि क्यों हम अपनी जाट विभूतियों को समय–समय पर स्मरण नहीं करते, न किसी संस्थान में उनकी स्मृति में व्याख्यान माला, न उनके जन्मदिन तथा पुण्यतिथियों पर दीया–बाती नमन।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 01.05.96) 25/5'6" Bachelor of Dental Surgery. Working as Drug Safety Associate in Paraxel International, Mohali (Punjab). Father in Govt. job in Chandigarh. Mother housewife. Avoid Gotras:Khokkhar, Saroha, Sehrawat. Cont.: 9872845123
- SM4 Jat Girl (DOB October 86) 35/5'5" MSc. Geography from Kurukshetra University. M. Phil, PhD., NET and JRF qualified. Employed as Assistant Professor in Kurukshetra University. Avoid Gotras:Panghal, Dalal, Sangwan. Cont.: 9646404899

- SM4 Jat Girl (DOB 09.08.89) 32/5'5" BDS from Punjab University Chandigarh. MPF from PGI Chandigarh. Working as Associate Coordinator WHI (CDTB-MOH & FW). Good package. Father retired Central Govt. Officer. Mother homemaker. Preferred Doctor, Engineer, Govt. Officer, Professor. Avoid Gotras:Dahiya, Khatri, Tehlan. Cont.: 9888950503 (Whatsapp)
- SM4 Jat Girl 26/5'1" NET in Commerce. B.Ed, Pursuing PhD. From MDU Rohtak. Working as Guest Faculty at CDLU Sirsa. Father in Haryana Govt. Mother housewife. Preferred match in government job. Avoid Gotras: Gill, Goyat, Sehrawat. Cont.: 9416193949
- SM4 Jat Girl (DOB 15.05.94) 27/5'4" MBBS, Pursuing M.D. Anesthesiology from PGI Rohtak. Preference M.D. MS Clinical. Avoid Gotras: Pannu, Gill, Dhull. Cont.: 94168658888
- SM4 Jat Girl (DOB 22.05.91)30/5'3" B.Tech, M.Tech, (Mechanical Engineering) from GJU Hisar, M.Tech. Gold Medalist. Pursuing P.hd. In Thermal Engineering from NIT Kurukshetra since 2017. Father in Government job. Mother Govt. Teacher. Avoid Gotras:Sandhu, Siwach, Gill, Sheoran (Direct).Cont.: 9813366793
- SM4 Jat Girl (DOB26.02.86)35/5'5" BCA, GNIIT, OCP (Oracle Certified).Working as Lead Consultant-Technology Delivery in Virtusa Consulting Service Private Limited at Banglore with Rs. 18-20 Lac PA. Father Senior Class-I officer in Centre Government. Mother housewife. Elder brother settled in USA. Avoid Gotras: Tomar, Punia. Cont.: 9899951722, 9654646288
- SM4 convent educated Jat Girl (DOB 1995) 26/5'2" B. Tech.from PEC Chandigarh. Working in MNC. Avoid Gotras:Jaglan, Rathi. Cont.: 9417133975, 7889278091
- SM4 Jat Girl (DOB 27.05.94)27/5'5" LLB, LLM from Punjab University. Advocate in practice. Preparing for judiciary exam. Father DGM in Haryana and Admin in Ambala. Preferred professional and Govt. job. Avoid Gotras: Nain, Bheron, Mor. Cont.: 9996606868
- SM4 Jat Girl (DOB 04.12.90) 31/5'2" MCA., Working in MNC Mohali. Avoid Gotras: Gulia, Malhan, Dalal. Cont.: 9780385939
- SM4 Jat Girl (DOB 01.01.95)26/5'2" MSc. (Math), B.Ed. Father retired Superintendent in Haryana Government. Family settled at Panchkula. Preferred tri-city based family. Avoid Gotras:Beniwal, Dhillon, Nehra. Cont.: 9466442048, 7888544632
- SM4 Jat Girl (DOB 09.11.94)27/5'4" MSc.(Math). B.Ed. Avoid Gotras:Kaliraman, Pawar, Jani. Cont.: 9416083928
- SM4 Jat Girl (DOB 10.09.94)27/5'4" JBT, B.A., M.A. (Political Science), Doing M.A. (Hindi)., HTET, CTET cleared. Avoid Gotras: Dahiya, Antil, Atri. Cont.: 9416824157, 9013440500
- SM4 Jat Girl (DOB 12.03.92) 29/5'7" B. Tech, M.Tech, CSC. Processing M.A. Own coaching centre at Sector 19, Panchkula. Avoid Gotras: Kajla, Sangwan, Chhikara. Cont.: 9891351685, 9671153757
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 29/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM in Criminal Law, Diploma in Labour Law, Diploma in Administrative Law, Ph.D in International law. Employed in Education Department, Haryana. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Girl 27/5'3" Pursuing P.hd. Linguistics from D. U., IILTES 9.5. Avoid Gotras: Kadyan, Mor, Bhicher. Cont.: 8168666817.
- SM4 Jat Girl 26/5'5" B. Tech (CS). Working as Deputy Manager in WNS at Gurugram with Rs. 20 lakh package PA. Father working in AFT Chandigarh. Mother housewife. Brother army officer. Avoid Gotras: Goyat, Khatri, Nain. Cont.: 8427737450, 7988624647
- SM4 Jat Girl (DOB 01.01.90) 31/5'2" Master in Pharmacy. Employed as teacher in Diploma College. Father retired from HES-II, Mother housewife. Avoid Gotras: Goyat, Dhankhar, Balhara, Kadyan. Cont.: 9996956282
- SM4 Jat Girl (DOB 25.01. 97) 24/5'6" M.Sc. (Chemistry) B.Ed. Avoid Gotras: Khatkar, Sheoran, Sohlat, Thakan. Cont.: 9888518198
- SM4 Jat Boy (DOB 03.10.90) 31/6'1" B.Tech. (Mechanical) from LPU Jalandhar. Working as Senior Auditor in C & AG, CGL Banglore. Father retired Hon SM, now working as an Admin Officer in Mankind Pharma. Mother housewife. Avoid Gotras:Dhankhar, Sangwan, Suhag. Cont.: 9805967450, 8219949508
- SM4 Jat Boy (DOB 02.07.93) 28/5'3" B.Tech. (Mechanical) from Kurukshetra University. Working in MNC Gurugram with Rs. 8 lakh package PA. Avoid Gotras:Bamal, Dhankhar, Sesma. Cont.: 9728481938
- SM4 Jat Boy (DOB 05.10.93) 28/5'7" B.Sc Computer Science from Punjab University Chandigarh. B.Ed from MDU Rohtak. Childhood Education Program from Canada. Settled and working in Manstreal Canada. Father retired Police Inspector Chandigarh. Mother housewife. Avoid Gotras:Lohchab, Hooda. Cont.: 9877640592, 8146991568
- SM4 Jat Boy (DOB 02.09.90) 31/5'8" B. Tech in Computer Science. Own business of Civil Contractor. Income 35-40 lakh PA. Family settled at Panchkula. Father retired from Indian Railway. Mother housewife. Avoid Gotras: Hooda, Jaglan. Cont.: 8288886399, 9041767693
- SM4 Jat Boy (DOB 23. 07. 93) 28/5'11" B. Tech in Mechanical Engineering from UIET, P.U. Chandigarh. Preparing for Civil service. Father passed away. Mother housewife. Avoid Gotras: Barak, Tomar, Dhariwal. Cont.: 9779265727
- SM4 Jat Boy (DOB 06. 11. 98) 23/5'9" B. Com. Own business of Mobile in Chandigarh. Avoid Gotras: Barak, Dalal, Kadyan. Cont.: 8146229865
- SM4 USA based Engineer Jat Boy (DOB 11.08.86) 35/5'8" ECE from Kurukshetra University. MS (CS &CF) from George Manson University USA. Employed in DELL USA (Chickago-USA) WELL OFF. Preferred MBBS Doctor, Engineer (CSE) from reputed Institute. Avoid Gotras: Dahiya, Khatri, Tehlan. Cont.: 9888950503 (Whatsapp).
- SM4 Manglik Jat Boy 30/5'11" B.A. Business of Footwear. Family settled in own house at Zirakpur. One year diploma in Computer. Avoid Gotras: Kharb, Narwal, Ravish. Cont.: 7508128129
- SM4 Jat Boy 32/5'7" B.A. Business of Footwear. Family settled in own house at Zirakpur. Avoid Gotras: Kharb, Narwal, Ravish. Cont.: 7508128129

- SM4 Jat Boy (DOB 06.01.91)30/5'8" B.Tech.inAuto Mobile Engineering. Master from University of South Florida F.L. (U.S.A.) Worked in California as Business Analyst. Now working in Gurugram as Business Analyst. Father Deputy Excise and Taxation Commissioner in Haryana government. Mother housewife. Avoid Gotras:Sheoran, Sehrawat, Kharb. Contact:7217602068
- SM4 son Jat Boy (DOB Oct. 99) 32/5'9" B.Tech. (NIT) Working as 1st Engineer in Cadence Americy Company Pune with package Rs. 16 lakh PA. Avoid Gotras: Gehlawat, Sangwan, Phogat. Contact:9466709254
- SM4 divorcee issueless Jat Boy (DOB 87) 34/6 feet Own business. Ten acre agriculture land, earning Rs. 12 lakh PA. Widow acceptable. Avoid Gotras: Pawar, Chahal, Ghanghus. Contact:8837619762
- SM4 Jat Boy (DOB 26.05.94) 27/6'3" B.Teh (Mechanical) and Auto Cat Mechanical. Settled in Canada. Father in Haryana Government service and mother Government Teacher. Avoid Gotras: Shyan, Punia, Duhan. Contact:9417303470, 9416877531
- SM4 Jat Boy (DOB05.11.97)24/6 feet. B.Tech. (Mechanical). Employed as Clerk in Chandigarh Administration on regular basis. Father in Haryana Government. Mother housewife. Preferred Govt./Private job in tri-city. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras:Nayotne, Badhrain, Panjeta. Cont.: 9467412702.
- SM4 convent educated Jat Boy 30/6'1". Employed as officer in Government job in Australia and own house in Australia. Father and Mother retired class-II officers from Haryana Government. Family settled at Yamuna Nagar. Avoid Gotras: Sheoran, Chahal, Dhanda. Cont.: 9518680167, 9416036007.
- SM4 Jat Boy (DOB 03.05.94)27/5'11". B.Tech from IIT Roorkee. Employed as officer in Government PSU with package of Rs.16 LPA. Father in Government service. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Redhu, Siwach. Contact:9888396275
- SM4 Jat Boy (DOB12.07.91) 30/6'2". B.Tech. Working in MNC at I.T. Park Chandigarh with package of Rs. 6 LPA. Father retired DGM from HMT Pinjore. Mother employed in Forest Department Haryana as Forest Officer. Family settled in own house at Panchkula. Residential plots at Panchkula and commercial sites at Air Port road, Mohali. Preferred match with Government job/MNC/Bank. Avoid Gotras: Malik, Ruhil, Nain. Cont.: 9467473796
- SM4 Jat Boy (DOB 03.06.95) 26/5'9" Medical 10+2, D-Pharmacy, LLB, Doing practice at Hisar. Father in Haryana Government. Mother housewife. Avoid Gotras:Beniwal, Kundu, Sheoran. Cont.: 9416355407.
- SM4 Jat Boy (DOB15.08.93)28/6'2" Employed in Government job at Chandigarh. Family settled in Chandigarh. Father in Government job. Mother housewife. Avoid Gotras:Punia, Mann, Sheoran, Phor. Cont.: 9466217701
- SM4 Jat Boy (DOB 01.03.93) 28/5'11" B.A., LLB, LLM Working as Legal Consultant in Law Firm at Chandigarh with Rs. 30000 PM. Father Class-I officer retired. Mother housewife. Family residence at Panchkula and Sonepat. Avoid Gotras: Malik, Jhanjharia. Cont.: 9876155702
- SM4 Divorced Jat Boy having one daughter, (DOB 09.08.85) 36/6 feet. Plus two passed. Agriculturist. Avoid Gotras: Pawar, Chahal, Ghanaghas. Cont.: 9317958900
- SM4 Jat Boy (DOB (13.04.87) 34/6'2" M.A. Public Administration, LLB from CLC Delhi University. Advocate, Practicing in Delhi. Father Additional Chief Secretary retired from Govt. of India. Mother Lecturer retired from Haryana Government. Elder brother married and working as Manager in Indian Overseas Bank. Avoid Gotras: Ahlawat, Malik, Sangwan.Cont.: 9417496903, 9023187793
- SM4 Jat Boy (05.01.93) 28/5'8" B.Tech (Mechanical). Working as group- C employee in Govt. of India, Department of Central Water Commission at National Water Academy, Pune. Father Haryana Government employee. Mother housewife. Avoid Gotras: Kaliraman, Panghal, Punia. Cont.: 9992394448
- SM4 Jat Boy (20.04.91) 30/5'8" B.Tech (Computer Science). Own business, with Sparrow GG Solutions_OPC Pvt. Limited. Income Rs. 6 lakh PA. Mother Assistant in Haryana government. Avoid Gotras: Kadyan, Ahlawat, Dagar. Cont.: 9876855880
- SM4 Jat Boy 30/5'8" B.Tech from Kurukshetra University. Working in MNC Company at Banglore with Rs. 26 lakh package PA. Avoid Gotras: Malik, Khatri, Dahiya. Cont.: 9463491567
- SM4 Jat Boy (DOB 22.10.92) 29/5'11" B.Tech (Electronics & Communication) Working in H.S.S.C. on contract basis. Father retired Under Secretary. Family settled in own house at Panchkula. Avoid Gotras: Nehra, Rathi, Duhan, Hooda. Cont.: 9417347896
- SM4 Jat Boy (DOB 30.09.93) 28/6'2" Bachelor of Arts with Math and Economics from P. U. Chandigarh. Passed two Post graduate diplomas in Event Management & Global Hospitality Management from Canadian College. Avoid Gotras: Phougat, Dahiya, Rathi. Cont.: 9915484396
- SM4 Jat Boy (DOB 10.08.88) 32/5'9" B.Tech. (Mechanical). Working as Training Officer, GITOT Rohtak. Avoid Gotras: Kharb, Rathi, Khatri. Cont.: 9416152842
- SM4 Jat Boy (DOB 27.04.89)31/5'10" B.Tech.in Bio-Medical Engineering. Working in a reputed Master's Medical Company with package of Rs. 16.5 lakh PA.Fatherbusinessman.Mother housewife.Avoid Gotras:Jatyan, Duhan, Dagar. Contact:9818724242.
- Suitable March for Jat Boy 28/6'1" B. Tech. Mechanical. Employed in SSWL Limited. with package of Rs. 470000/- PA. Own house at Tri-city. Avoid Gotras: Nehra, Kadiyan, Dhull, Malik. Cont.: 9876602035, 9877996707
- SM4 Jat Boy (DOB 14.12.95) 25/5'9" B. Tech (Mechanical). Pursuing LLB. Working as Design Engineer Training (GET) in MNC. Father gazetted officer in Haryana Government. Own house at Faridabad. Avoid Gotras: Sangwan, Hooda, Malik, Kundu. Cont.: 9810365467
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.94) 27/5'8" BA, LLB from Punjab University Chandigarh. Father retired SDO Agriculture from Haryana Government. Mother housewife. Family settled in own house at Zirakpur. Own hotel at Ambala Road. Avoid Gotras: Balyan, Deswal, Pannu, Direct Duhan, Ahlawat. Cont.: 9216886705, 7355555667

दानवीर देशपाल द्वारा यात्री निवास कटरा के लिये विशेष आर्थिक योगदान

श्री देशपाल सिंह सुपुत्र श्री हरबंस सिंह निवासी मकान नं. 990, सैक्टर 3, कुरूक्षेत्र (हरियाणा) ने अपनी धर्मपत्नी स्व० श्रीमती कुसमलता की मधुर स्मृति में अत्यंत श्रृद्धा एवं विनम्रता पूर्वक 5,00,000 (5 लाख) रुपये की राशि चौ० छोटूराम सेवा सदन यात्री निवास कटरा–जम्मू में कक्ष के निर्माण हेतू जाट सभा चण्डीगढ़ को सहर्ष और आदरपूर्वक दान स्वरूप प्रदान की है।

जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं चौ० छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त सदस्यगण इस पवित्र कार्य के लिये सार्वजनिक हित में दिये गये अनुदान के लिए श्री देशपाल सिंह का तहदिल से अभिनन्दन व आभार व्यक्त करते है और उनके व समस्त परिवार के सुखद स्वास्थ्य एवं मंगलमय भविष्य के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

प्रधान, जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा–जम्म

अजीत समाचार

चौधरी छोटूराम की 141 वी जयंती के अवसर पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए जाट सभा के प्रधान डॉ महेंद्र सिंह मलिक व कार्यकारिणी के सदस्य तथा (दाएं) कटरा के लिए 5 लाख का चेक भेंट करने पर देशपाल तोमर को सम्मानित करते हुए जाट सभा के प्रधान डॉ महेंद्र सिंह मलिक।

जाट सभा ने मनाई गई चौ. छोटूराम की 141 वीं जयंती

कोविड गाइडलाइंस का पालन करते हुए रहबरे-आजम की प्रतिमा पर अर्पित की पुष्पांजलि

जाट सभा चंडीगढ़ व पंचकूला द्वारा यहां सेक्टर-6 स्थित चौधरी छोटूराम भवन में किसानों के मसीहा चौधरी छोटूराम की 141 वीं जयंती मनाई गई। कोरोना महामारी को देखते हुए एक सादा समारोह आयोजित किया गया। जिसमें कार्यकारिणी के सदस्यों ने सरकार द्वारा कोविड-19 को लेकर जारी की गई गाइडलाइंस का पालन करते हुए रहबरे-आजम दीनबंधु छोटूराम की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। इससे पूर्व, चंडीगढ़ स्थित जाट भवन में स्थापित चौधरी छोटूराम की प्रतिमा पर भी पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। जाट सभा के प्रधान एवं हरियाणा के पूर्व डीजीपी डॉ महेंद्र सिंह मलिक ने इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि दीनबंधु छोटूराम किसान-मजदूर की हालत से चिंतित रहते थे, उन्होंने इन वर्गों के लिए अनेक कानून बनवाए। इसके अलावा उन्होंने समाज की बेहतरी के लिए कई ऐतिहासिक कदम उठाए।

उन्होंने केंद्र सरकार पर केंद्रीय बजट में किसानों की अनदेखी का आरोप लगाते हुए किसान-आंदोलन में शहीद हुए 700 किसानों के परिवारों को आर्थिक सहायता एवं एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने की मांग की। उन्होंने हाल में हुई बारिश से नुकसान की गिरदावरी करवा किसानों को भरपाई करने की भी मांग दोहराई। डॉ मलिक ने कहा कि केंद्र सरकार को पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ में चौधरी छोटूराम के नाम से एक चेयर स्थापित करनी चाहिए ताकि युवा कृषि के क्षेत्र में शोध कर सकें, क्योंकि चौधरी छोटूराम का पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से विशेष नाता रहा है। उन्होंने हरियाणा सरकार से पंचकुला में भी सेक्टर-6 के पास स्थित चौक का नाम चौधरी छोटूराम के नाम पर रखने तथा नगर निगम पंचकूला के टपरी पार्क का नाम भी चौधरी छोटूराम पार्क रख कर उसमें चौधरी साहब की प्रतिमा स्थापित करने की मांग की।

इस अवसर पर जम्मू के कटरा में निर्माणाधीन चौधरी छोटूराम यात्री निवास के लिए 5 लाख का चेक देने पर कुरुक्षेत्र निवासी देशपाल तोमर को सम्मानित किया गया। देशपाल ने अपनी स्वर्गीय धर्मपत्नी कुसुमलता की स्मृति में कमरा बनवाने के लिए 5 लाख रुपए की राशि दान की है। कार्यक्रम में चौधरी छोटूराम को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद जाट सभा के उपप्रधान राजसिंह हुड्डा व आजीवन सदस्य रहे महबीर सिंह गहलावत के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया और उनकी आत्मिक शांति के लिए 2 मिनट मौन धारण किया गया।

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। बिल्ड़िग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्ड़िंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्री निवास स्थल पर ब्लॉक विकास एवं पंचायत अधिकारी (बी.डी.पी.ओ.) कटरा द्वारा सरकारी खर्चे से दो महिला एवं पुरूष स्नानघर व शौचालय का निर्माण किया जा चुका है और पानी के कनैक्शन के लिये भी सरकारी कोष से फंड मंजूर हो गया है और शीघ्र ही पानी की आपूर्ति का कनैक्शन चालू हो जायेगा।

जाट सभा द्वारा यात्री निवास भवन का निर्माण कार्य शीघ्र शुरू करने का प्रयास था लेकिन कोविड़-19 महामारी के कारण निर्माण कार्य शुरू नहीं किया जा सका और इस महामारी का जाट सभा की वित्तीय स्थिति पर भी प्रभाव पड़ा है। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला यात्री निवास भवन का निर्माण करने पर वचनबद्ध है और शीघ्र ही निर्माण शरू कर दिया जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला जीन्द (हरियाणा), वर्तमान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111/- तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426-427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह निवासी मकान न0 990, सैक्टर-3, कुरूक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा, चण्डीगढ को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड-एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : **डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)**

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932, 2641127, 8968108266
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।